CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अष्टसई

डॉ. महेश सिंह यादव

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अष्टसई

डॉ० महेश सिंह यादव

सपना अशोक प्रकाशन

3/552 रामपुर, रामनगर, वाराणसी - 221008

कार्यालय : बी0 36/777 कबीर नगर कालोनी, दुर्गाकुण्ड, वाराणसी -221005

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

Astasai

Dr. Mahesh Singh Yadav

ISBN : 81-903703-8-3

© प्रकाशकाधीन

संस्करण : नवीन

छात्र संस्करण :
मूल्य : 40.00
(चालीस रुपये मात्र)

पुस्तकालय संस्करण :
मूल्य :125.00
(एक सौ पच्चीस रुपये मात्र)

शब्द संयोजक : विद्या प्रकाश दुबे
कबीर नगर, वाराणसी

निगेटिव : भट्टाचार्या ग्राफिक्स
जगतगंज, वाराणसी

मुद्रक : कमला प्रिन्टर्स
औरंगाबाद, वाराणसी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

त्वदीयं वस्तु गोविन्द
तुभ्यमेव समर्पये

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भूमिका

प्रस्तुत दोहों में सम्वेदनात्मक स्तर पर रचना-प्रक्रिया की एक वाटिका को सजाया गया है। जीवन की अनुभूति को ही एक सूक्ष्म आकार दिया गया है, जिसमें जीवन के हर पहलू समाहित हैं। परम्परागत तथ्यों के साथ ही आधुनिक युग में जीवन के बदलते हुए मूल्यों पर भी विचार किया गया है। समाज परिवर्तनशील है, परिवर्तन ही इसका सौन्दर्य है, परिवर्तन में फूल और शूल दोनों साथ-साथ चलते हैं, आज के परिवर्तित भारतीय समाज में भी दोनों का संयोग देदीप्यमान है। फूल से तो हृदय आनन्दित होता है पर शूल तलवार की तरह हृदय में घाव कर देता है। लाख कोशिश करने पर भी यह घाव भरती नहीं है, बल्कि और बढ़ती ही चली जाती है, जिससे हृदय अत्यन्त दुःखी रहता है। ये दोहे इस आहत हृदय की ही पुकार हैं।

आज का बदलता हुआ समाज आर्थिक दृष्टिकोण से सुखी तो हुआ है, साधन सम्पन्न हुआ है। शिक्ष दीक्षा का काफी विस्तार हुआ है। रहन-सहन में भी काफी बदलाव आया है, र मनुष्य की शान्ति भंग हुई है, उसके पावन सम्बन्धों की होली जलायी यी है। मानवता का मर्डर किया गया है। इन्सानियत को जेल-खाने में बन्द कर दिया गया है। मेरी दृष्टि में इन सबका कारण अर्थोपार्जन की होड़, अपने ईष्ट के प्रति अविश्वास, अनास्था, बुजुर्गों का अपमान, स्वयं को पूर्ण समझना तथा गुरु एवं शिष्य के कपटपूर्ण व्यवहार हैं। मनुष्यता, शान्ति तथा मनुज-जाति की उन्नति के लिए इन सबका त्याग करना होगा और सद्भाव, सहयोग, सहानुभूति, सदाचार, सत्य एवं सहिष्णुता का बीज बोना होगा। इन्हीं बीजों के वपन हेतु मैंने इन दोहों का सृजन किया है, जिसमें गुरु और भगवान का विशेष महत्व है, निर्मल हृदय से व्यक्ति को गुरु तथा भगवान का सम्मान करना चाहिए तथा गुरु को निर्मल हृदय से शिष्य की उन्नति की चिन्ता करनी चाहिए एवं मानवत का विशाल वट-वृक्ष तैयार करना चाहिए।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मनुष्य को अपने छोटे से लाभ के लिए, क्षुद्र स्वार्थ के लिए पथभ्रष्ट नहीं होना चाहिए, कुछ नीतिपरक दोहे भी इसमें हैं, जिससे मनुष्य का उत्थान हो सके और वह कदम-दो कदम चल सके।

इसमें खड़ी बोली तथा ब्रजभाषा दोनों के शब्द समाहित हैं, जो अज्ञानता नहीं बल्कि दोनों के प्रति सहृदयता है। क्योंकि दोनों एक ही माँ की दो पुत्रियाँ हैं, दोनों सगी बहनें हैं। जो एक-दूसरे के सहयोग से मजबूत हो रही हैं, निखर रही हैं।

इस काव्य-ग्रन्थ का अष्टसई नाम किसी प्रतिक्रियावश नहीं रखा गया है, बल्कि धीरे-धीरे इन दोहों की संख्या आठ सौ से अधिक हो गई, इसलिए इसका नाम मैंने अष्टसई रख दिया।

आधुनिक युग में मुक्त छन्द में, रचनायें हो रही हैं, जो गद्य का ही विकृत रूप है, जिसमें हृदय का स्थान बुद्धि ने ले लिया है, जिसका कुछ दिनों तक मैं भी शिकार रहा, पर इससे काव्य का विकास नहीं बल्कि ह्रास है, और छन्दों का अपमान है।

अतः मैंने दोहा छन्द को चुना है जो मेरा बाल प्रयास है, यदि इसमें कहीं शैल्पिक अथवा भावात्मक त्रुटि होगी, तो पाठकों का मैं क्षमाप्रार्थी हूँ। हाँ शब्दों का तोड़-मरोड़, मेरी व्यक्तिगत बाध्यता है।

मैं अपने कुछ गुरुओं तथा मित्रों का आभारी हूँ, जिन्होंने इस रचना हेतु आत्म-विश्वास दिया और मुझे अपनी प्रेरणा से उत्प्रेरित किया।

महेश सिंह यादव

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बालक का बल रुदन है, रुदन रिझावत लोक।
रुदन बाद किलकत शिशु, किलक हरत बहु शोक।।1।।

नहीं क्रोध अपशब्द मुख, बुद्धिमान पहचान।
नहीं कहा कुछ राम ने, रावण मारत बान।।2।।

सदा डरो नर गर्व से, गर्व बनावत खर्व।
गर्व किया रावणबली, नाश किया खुदसर्व।।3।।

पौरुषहीन मनुज जो, करत भाग्य की आस।
बैठे चाटे ओस से, कहाँ जात है प्यास।।4।।

कायर की पहचान है, डरत सदा है हार।
भूखा तट पर बैठ कर, नहीं जात बिच धार।।5।।

कायर जो हैं जगत में, शूकर जीवन जान।
पकवान तजि मैला भखत, रोवत-भाग्य मशान।।6।।

कायर लोभी लोमड़ी, सदा रहत बिल माहिं।
भोजन पर लट्टू बनत, काम देखि थिर नाहिं।।7।।

कलयुग के संसार में, नहीं कहत जन सत्य।
भारी पलड़ा देखकर, उसका बनत अपत्य।।8।।

खूब पढ़त-बोलत न बहु, सोच-श्रवन बहु होय।
बन्धु बनावत कर्म को, बुद्धिमान नर सोय।।9।।

छल-कपट, द्वेष त्यागकर, बालक का वपु लेहु।
राम-नाम आहार कर, तन-मन सब प्रभु देहु।।10।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नहीं बली जग कहै, पशु-बल जिसको होय।
बली वही संसार में, सुखी जहाँ सब संग।।11।।

व्यंग्य धार बहु तेज है, बेधत सर्व शरीर।
चाप नहीं पहुँचत वहाँ, सहता मात्र फकीर।।12।।

जहाँ नहीं कुछ समझ है, तर्क वहाँ बेकार।
जैसे सींचे बाँस के, फलत नहीं रसदार।।13।।

मौन रहो जब कलह है, सम्भव तब कल्यानि।
जैसे गहरे सरित में, शान्त रहत है पानि।।14।।

जग है पुस्तक एक ही, जिसमें पृष्ठ अनेक।
जस गुलाब की गाँछ, फूल-शूल की टेक।।15।।

पृष्ठ-पृष्ठ से सजा हुआ, पुस्तक है संसार।
इसमें जिसका मन लगा, जीवन है बेकार।।16।।

विनय बसत उर जिसके, बनता वही महान।
पानी गिरत जमीन पर, सिर पर है सम्मान।।17।।

चाहत हित जौं आन की, स्वयं लाभ सिर होत।
गन्ध देत ही और को, चढ़त पुष्प हर गोत।।18।।

बसत भलाई हृदय जिस, भला रहा संसार।
बुरे बुराई के चलत, अग्रज भी बेकार।।19।।

रही ज्ञान की मोटरी, जिसके उर उपकार।
जैसे ऋतुओं में मिलत, ऋतु बसन्त सत्कार।।20।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वाद-विवाद के बढ़त ही, दुख-सागर लहरात।
जैसे ओला पड़त ही, करत फसल को घात।।21।।

प्रेम करत उपकार जो, वही जगत में पूज्य।
जैसे निकट तड़ाग के, पशु-पक्षी का कूज्य।।22।।

चाहत जो जग का बुरा, उसका नहीं सम्मान।
जैसे बिच्छू देखकर, कर डण्डा इन्सान।।23।।

बुरा नाम जिसका पड़ा, होत नहीं विश्वास।
जैसे जेठ की धूप में, कहाँ मेघ की आस।।24।।

नेत्र मिला चंचल जिसे, नहीं पात्र विश्वास।
अवसर पाकर फसल का, कर चौपाया नाश।।25।।

नेत्र रहा कर अंध का, लाठी पग है पंगु।
प्रकृति हितकर जीव की, सबके हितकर गंगु।।26।।

दुर्जन की जग मित्रता, सुबह की छाया जान।
शुरु-शुरु में बढ़त है, फिर हो शून्य समान।।27।।

मूर्ख लोग संसार में, दुर्वच करत हैं नाश।
जैसे बस मरुभूमि में, नष्ट होत है घास।।28।।

अनभल नर का जगत में, करत बन्धु अरु मीत।
रावण का सिर शव बना, राम-विभीषण प्रीत।।29।।

पशु-पक्षी, नर, कीट, भृंग, सब चाहत है प्यार।
शील और सम्मान की, सबकी रही पुकार।।30।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सत्य अहिंसा अस्त्र से, सम्भव जग कल्याण।
बापू के उर ये बसे, भारत बना महान।।31।।

जन-जन का सम्मान ही, भारत की पहचान।
इसके कारण जगतगुरु, समझो हिन्दुस्तान।।32।।

अपमान, सम्मान, जगत, रही कर्म पहचान।
राम बसत बजरंग दिल, मारत रावण बान।।33।।

नर कर कर्म का शस्त्र है, करत रंक से राव।
शाखामृग से बिबुध हनु, बने राम के भाव।।34।।

आदमी परखो एकदा, कंचन परखो लाख।
नाले के पय-कीच में, कहाँ मवस्यर दाख।।35।।

बहुत साधु हैं जगत में, लोभ-क्रोध के दास।
त्यागे दारा गेह पर, त्याग न पाये आस।।36।।

साधु वेश संवार कर, फिरत रहत दिन-रात।
करनी खल की करत है, सर्प-हृदय मृदु बात।।37।।

देशकाल के भाव से, बचा नहीं जग कोय।
विश्वामित्र से सन्त भी, गणिका के वस होय।।38।।

साधू के शुभ वेश में, लूटत बसंत बहार।
सुख-सुन्दर पकवान से, मात गृही संसार।।39।।

तंत्रजाल के ढोंग से, लूटत साधु जग सोन।
जनता ऐसी बांवली, धावत दस दिक् कोन।।40।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

साधू के विश्वास पर, नमन करत जग भूल।
शिष्यों का धन खा-खा, संत बढ़ावत शूल।।41।।

ज्ञानशून्य है स्वयं ही, कहाँ करैं दुख दूर।
लंगड़े के संग जगत, कौन बना है शूर।।42।।

वेदशास्त्र के रटन से, नहीं बढ़त है ज्ञान।
कर्म-दान, आचार से, बढ़त साधु सम्मान।।43।।

साधु असाधु की जगत में, कठिन रही पहिचान।
बक मराल का रुप धर, ठगत जगत ईमान।।44।।

रटत कण्ठ सुन्दर शब्द, बोलत बचन महान।
तृण के खातिर विप्रवध, करत नहीं सकुचान।।45।।

विप्र वही है जगत में, कर्म करत जो उच्च।
सदाचार व्यवहार से, पैर बढ़ावत सुच्च।।46।।

भोजन-वस्त्र, मकान ही, नहिं जीवन का सार।
राम नाम के पटतरे, सर्व सुलभ संसार।।47।।

उचित-अनुचित का ध्यान रख, सदा बढ़ाओ पैर।
बर-विवेक के संग, सफल होत है सैर।।48।।

आग-पीछ जहँ करत मन, उचित नहीं वह काम।
छत जो हिलती हवा महँ, खतरनाक है धाम।।49।।

आग लिहाफ गरीब की, ठण्ड करत है दूर।
जागत, सोवत स्वप्न में, सदा सहायक पूर।।50।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

साइकिल कार गरीब की, दौड़ करत सब काम।
मीठी अपनी कामरी, अपर हेम बेकाम।।51।।

मंजिल उसके पास है, करत काम मन लाय।
कच्छप कहँ पीछे रहत, दौड़ सफल कर धाय।।52।।

दुष्टों की परवाह तजि, करो कर्म बिनु मान।
वक्र वचन संसार का, स्वच्छ करत उर गान।।53।।

जहाँ हरन है दीन दुःख, वहाँ धर्म का धाम।
बाकी सब संसार में, झूठ कमाते नाम।।54।।

वाणी का शृंगार वहाँ, बोलत जहाँ सम्हार।
जैसे सन्तों के वचन, उपजत सुख संसार।।55।।

वचन नहिं है झूठ जग, जिससे जन उपकार।
झूठा तो वह रूप है, जिससे आह! प्रहार।।56।।

अनुभव मूर्ति बुजुर्ग हैं, उचित देत हैं राय।
सम्मति से जो काम कर, विपत्ति ठौर न भाय।।57।।

करत वृद्ध अपमान जो, जनु मन गर्दभ होत।
मार कुल्हाड़ी पैर में, बनत विपत्ति का सोत।।58।।

बाप दुष्ट मक्कार जब, बेटा कहाँ सपूत।
जैसे वृक्ष मदार पर, कहाँ आम का दूत।।59।।

वह नर सिंह समान है, करत नहीं निज सोच।
डूबत का तिनका बनै, कूद जात तज लोच।।60।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दूध पियो, कसरत करो, देह लगाओ धूल।
स्वस्थ रहो, विद्वान बन, फैशन जाओ भूल।।61।।

फारसी फैशन से नर, बनता नहीं अमीर।
वही धीर है जगत में, दूर करत जो पीर।।62।।

प्यार दिखाये जगत में, सुलझ जात सब काम।
जैसे प्यार तुरंग से, दौड़ राम हमारे धाम।।63।।

ओछे नर जो जगत में, पग-पग करत विवाद।
जैसे बिन ही कारणे, भौंक कूत अपवाद।।64।।

बिना राम के सुख कहाँ, जगत सकल भंगूर।
जैसे बिना वसुन्धरा, कहाँ बीज अंकूर।।65।।

बक मराल है श्वेत तन, गुण ग्राही है हंस।
एक रूप में राम अरु, जगत विदित है कंस।।66।।

गुण की पूजा होत है, अवगुण का अपमान।
सर-सरोज गुण गहत नर, सर्प देखि लठ तान।।67।।

दुष्ट की दुर्जनता का, जरुरी है जवाब।
सर्प समान था रावण, राम ने किय कबाब।।68।।

कुशल नहीं अतिचाह में, असुर रूप साकार।
ज्यों राजन के चाह में, भारत बना लचार।।69।।

नहीं क्षमा है नर जहाँ, चढ़ा विनाश कपाल।
विदित जगत है दशानन, नहीं बचा यम-काल।।70।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दुष्ट तजत नहिं दुष्टता, सज्जन के भी संग।
जैसे पय के संग रह, विष कहँ तजत भुजंग।।71।।

संगति से मन बढ़त है, संगति से घटि जात।
वारिश से सरिता बढ़त, गर्मी से कुम्हिलात।।72।।

दुर्लभ मनु तन पायी के, नहीं भजा जो राम।
विषय कीट बन दुखी नर, करत प्रभु वदनाम।।73।।

नर तन पाकर विषय से, करत जगत जो प्यार।
गुंजा को रख हाथ में, पारस देता बार।।74।।

योनि चौरासी लख में, घूमत दुखी गँवार।
कबहूँ प्रभु करुणा करि, देत मनुज तन सार।।75।।

जानत नहीं रहस्य नर, फिरत भूल संसार।
काम-क्रोध को अंगरख, जीयत जीव बेकार।।76।।

मनुजी योनि में आकर, नहीं होत भव पार।
पुण्य-शास्त्र बन निन्दका, गर्दभ पर असवार।।77।।

चाहत गर परलोक सुख, गठरी बाधों बात।
भक्ति करो रघुनाथ की, निर्मल उर दृढ़ गात।।78।।

भक्ति हीन जो मनुज है, प्यारा नहिं रघुनाथ।
बिना गांठ ज्यों जगत में, कौन देत है साथ।।79।।

पुण्य एक है जगत में, करो विप्र की सेव।
करत विप्र की सेव जो, मनोकूल सब देव।।80।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विप्र वही है जगत में, भवसागर जो पार।
माया मोही लोभ रत, विप्र नहीं, जग भार।।81।।

बिना गुरु की भक्ति के, नहीं द्रवत रघुनाथ।
बिना चूत के तरु ज्यों, कहाँ चूत फल हाथ।।82।।

मनुज स्वभावे हो सरल, लोभ नहीं, सन्तोष।
प्रभु का दास कहावते, एक मात्र प्रभु पोष।।83।।

बैरी मित्र न जगत में, नहिं आस अरु त्रास।
सज्जन प्रीति संत संग, करत तहाँ प्रभु वास।।84।।

शत्रु सभा धन-धाम तन, सब कुछ समझो राम।
राम से ही प्रीति बढ़े, नहीं और से काम।।85।।

सकल जगत है मतलबी, राम मीत परमार्थ।
खाते फल नवद्रुमीं का, काटत चुकत न स्वार्थ।।86।।

नीच कर्म उपरोहिती, फल नहिं अच्छा होय।
स्मृति वेदी पुराण सभी, चूकत न निन्दा कोय।।87।।

लीला राशि अनन्त प्रभु, नहीं थाह का भाव।
काक, गरुड़, अरु नारद, पाये कहँ ये ठाव।।88।।

होती मरने की चाह, रख जीवन का ज्ञान।
मात्र प्रेम जीवन संग, कहाँ मरन का भान।।89।।

दूर रहत जो पाप से, करत धर्म आचार।
सुखी होत सबकाल वह, बचत काल की मार।।90।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अशन करत जो ठूस-ठूस, देत निमन्त्रण काल।
सोवत जागत विषय से, सदा रहत बेहाल।।91।।

मन लागत संसार में, हँसत काल के दूत।
मेरा घर अब भरेगा, नाश जीव खर पूत।।92।।

मधु पुष्प है जगत, गन्ध सुहावन होय।
पुष्प पुट बन्द शाम जब, नहीं सहारा कोय।।93।।

काम सकल संसार में, औचित्यपूर्ण गीत।
धूप, ठण्डी, बारिश जिमि, ऋतु आये शुभ मीत।।94।।

समय होत हर काम का, घबराहट बेकार।
फल रसाल ऋतुकन्त में, पावस बरस लचार।।95।।

सुख-दुख पड़े शरीर पर, नहीं सन्त घबरात।
जैसे बारिश के हुए, न वारीश बढ़ि जात।।96।।

बढ़त वेदी से वेदी, पढ़ो सुनो मन लाय।
बहुत दिनों के सेव से, मृदुल चूत मघु आय।।97।।

भला मनुज से श्वान है, कभी न धोखा देत।
आपद देखत स्वामी पर, प्रथम माथ निज भेट।।98।।

विहग, मृग, कीट, बाल को, मधुर बचन से प्रीति।
प्रिय बोलत ही हँसत शिशु, डाँटत रोवन रीति।।99।।

प्रिय वाणी जहँ जगत में, धोखा है साकार।
जैसे मीठा में रहत, कीड़े का आचार।।100।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नीम हकीम खतरनाक, सदा रहो सवधान।
अति ढीली, अति तान से, कहँ बढ़त वीण शान।।101।।

वैभव उतना उचित है, जिहि कुटुम्ब पलि जाय।
इसके बढ़ते गेह में, सब अचार जरि जाय।।102।।

आचार झोला वैभव, लक्ष्य झोल आलस्य।
कंगाली झोल जीवन, नहीं बुढ़ापा वस्य।।103।।

वहीं वास सुन्दर भला, जहाँ नीति सत्संग।
रघुवर के ही नाम से, मिटत भूख मनु अंग।।104।।

चढ़त जवानी में सदा, सब शरीर पर रंग।
जैसे होते ज्ञान के, होत मोह जग भंग।।105।।

फिकिर मान की जगत में, सदा बढ़ावत क्रोध।
इसको त्यागे समझ तू, होत सदा मनु बोध।।106।।

पूस में पाला पड़ते, रोवत अरहर मास।
सकल किसान निरुपाय, नहीं गेह शुभवास।।107।।

सकल मनुज हैं बन्दर, नहीं खात अघात।
पेट-बेंट के कारने, केवल जग उत्पात।।108।।

सदा बढ़ाओ प्रीति तू, तुलसी, गौ, शुभकर्म।
सद्गुरु पद निज माथ रख, मिले कंज उर धर्म।।109।।

प्रेम मूल आयुध रहा, सदा रखो निज माथ।
मनुज बात तो दूर है, प्रेम बसत रघुनाथ।।110।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रेम सूर्य जग है कमल, किरण भानु विगसाय।
प्रेम बिना मुरझाय जग, पानी में गिर जाय।।111।।

ईमानदारी सत्य से, सदा सजाओ हाथ।
इनके रहते संग में, जन्म सफल है माथ।।112।।

रुचि-विचार की संगति, अलग-अलग शुभ होत।
खर-तुरंग जग इक संग, कहाँ झलकता स्रोत।।113।।

टूटी मडैया अच्छी, रही जगत में प्रीति।
सुन्दर महल अट्टालिका, दुखद दुनाली रीति।।114।।

सीमेण्ट ईंट बालू घर, मनुज आज धनवान।
ठण्ड ठण्डा, धूप गर्म, नहिं भूकम्प ठिकान।।115।।

पशु-पक्षी अरु जीव-जन्तु, सब हैं एक समान।
इनके ही सम्मान से, है नर का सम्मान।।116।।

पैदल चलना भल रहा, करता था मनु प्रेम।
बस, गाड़ी, जहाज से, सकल मिट्रा जग नेम।।117।।

जब तक दिल तूफान है, सकल मनुज दुखगात।
इसको कर दो दूर नर, तभी शान्ति की बात।।118।।

कण समान वटबीज में, छिपा रहत वटपेड़।
वैसे सूक्षम ब्रह्म में, रहत जगत जनु भेड़।।119।।

नीर बीच घोलत लवण, लवण रुप छिप जात।
कण-कण व्यापी ब्रह्म रुप, नहीं सहजप्रकटात।।120।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सर रखत सर सर्व दृष्टि, पनपत जोंक सरोज।
वैसी दृष्टि राम की, प्रेम भक्ति के ओज।।121।।

मोह हुआ जगदम्ब के, लीन्ह रुप सिय आनि।
हुआ विछोह शंकर तल, दुख की सजी मकानि।।122।।

प्रेम भक्ति बिनु राम की, हृदय होत नहिं शुद्ध।
बिनु गुरु कृपा जगत में, कहाँ राम नर बुद्ध।।123।।

पद-सरोज रत राम जो, भाग्य सराहत देव।
होत प्रकाश भास्कर तल, नहीं चन्द्र की सेव।।124।।

राम-कृपा जहँ होत है, नहीं शरण तम-मोह।
जैसे अंशुमाली उदय, नहीं रात सन्दोह।।125।।

गुनत सुनत जग राम गुण, जीव जगत घबरात।
नहीं भ्रमर का रूप वह, गोबर कीड़ा खात।।126।।

सर से सर जब जात है, हाथ मले कछु नाहिं।
बिती जवानी मनुज की, कहाँ जवानी आहि।।127।।

ऐसा मनुज विचार कर, शरण राम की जाहु।
देते राम कृपालु जो, सिर झुकाई खूब खाहु।।128।।

निर्बल का निर्वाह नहीं, करत सबल से बैर।
फूँक झोपड़ी बीच रह, कहाँ मनुज को खैर।।129।।

बढ़ा गंग का नाम जब, मिली जाइ वारीश।
महिमा बढ़त सुजान की, पहुँचत गृह पर ईश।।130।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पत्थर में भी राम हैं, करत भक्त कल्याण।
खम्भे से नरहरि निकल, बचा लिये प्रह जान।।131।।

चुप रहना जग उचित है, बुरे दिनों को देख।
आवत दिन बसन्त के, होत सुहावन लेख।।132।।

जिस की जैसी प्रकृति, करत वही व्यवहार।
सज्जन-दुर्जन बीच में, समता कहाँ आचार।।133।।

सज्जन के संग बसत नर, मिलत ताहि सम्मान।
पुहुप संग बसि कीट ज्यों, सिर पर चढ़त सुजान।।134।।

जितने देवह जगत में, सभी महान विभूति।
राम एक नभ चन्द्र है, अपर नक्षत्र देव-भूति।।135।।

जनक राम लख पुत्र हैं, सभी पुत्र गुण भिन्न।
सबपर स्नेह समान पितु, नहीं हृदय में खिन्न।।136।।

देख-रेख पितु करत सुत, अवगुण करता दूर।
जहाँ पाँव पंकिल बनत, बोध करावत पूर।।137।।

हिजड़ा, नर अरु नारि जग, खग-मृग प्राणि सुजान।
कपट त्यागि निर्मल हृदय, भजे राम कल्याण।।138।।

जांति-पाँति का भेद जग, है समाज विष खान।
राम शरण में एक सब, भजत राम प्रिय प्राण।।139।।

जाति चमार रविदास की, किये कपट तजि सेव।
ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य सब, मानत उनको देव।।140।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नीचन के संग जगत में, लगत कलंक हजार।
जैसे चेरी संग में, कैकय हुई लचार।।141।।

बिना संतोष जगत में, दूर होत नहिं काम।
काम रहत नर सुख नहीं, काम दूर भजु राम।।142।।

काम नसे बिनु ज्ञान नहिं, ज्ञान बिना नहिं साम।
बिन बसुन्धरा जगत बर, कहाँ विटप तरू जाम।।143।।

ज्ञान कहाँ जग धर्म बिन, श्रद्धा बिनु कहँ धर्म।
बिना पुहुप शुभ कुंज में, कहाँ गन्ध का कर्म।।144।।

प्रभु रूप महामहीम गुरू, दण्ड प्रणाम हमार।
विषय-वासना दूर कर, करहु दास भव पार।।145।।

पहिले गुरू पाछे प्रभु, यहीं हमार गोहार।
एहि विधान चेला जगत, खर तजि बाजि सवार।।146।।

भला स्वास्थ्य समझ भली, जीवन के वरदान।
इनको पाकर जगत में, बनता मनुज महान।।147।।

राजा का कर्त्तव्य है, प्रजा पुत्र समान।
करत व्यवस्था राज्य की, सबको दे सम्मान।।148।।

मुख पर अच्छी बात हो, अन्दर चले तूफान।
ऐसे मित्र की त्याग में, समझो तुम कल्याण।।149।।

मृदुल सुहावन बात हो, रहा हृदय अहि जान।
अन्दर विष छीर ऊपर, भरा कलश तू जान।।150।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वही सफल जग मित्र है, हो विपत्ति में साथ।
मित्र दरद अपना समझ, रहे सदा नत माथ।।151।।

निर्मल हृदय विवेक संग, चलता जो संसार।
सुखी और सम्पन्न रह, करत अटल प्रसार।।152।।

मात - पिता को मारकर, गणिका लाये धाम।
हिंसा और गुमान से, करते अपना काम।।153।।

लालच का मन्दिर बना, सीढ़ी बनी है क्रोध।
मद का दरवाजा लगा, खड़ा द्वार पर मोह।।154।।

देवा - देवी छोड़कर, वेश्या की तस्वीर।
उसकी पूजा - अर्चना, करत देश के कीर।।155।।

शास्त्र की चर्चा तजकर, बनी फिल्म प्रधान।
अभिनेत्री, अभिनेता की, केवल बढ़ी बखान।।156।।

अपना जो बेटा रहा, कत्ल किया निज हाथ।
लूटाया जिसपर अमन, सुमन नहीं अब साथ।।157।।

सारा जीवन बीत गया, दारा सुत परिवार।
आय बुढ़ापे का समय, अब किस काम आचार।।158।।

अर्वाचीन मानव जगत, बना आलस्य की खान।
भाग - भाग कर कर्म से, बनता वीर महान।।159।।

आज अमीरी के मापन, हुआ देश बरबाद।
निशि-वासर जग बैठ सो, बना मनुज मनुजाद।।160।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रम से भाग जो खाटपर, जग कहता है उच्च।
रात-दिन जो खट रहा, उसका नाम है लुच्च।।161।।

भोजन भला, वस्त्र भला, और भला मकान।
बिना किये सब कुछ मिले, यही जगत अज्ञान।।162।।

काम-क्रोध अरु लोभ का, सुन्दर सरस मकान।
स्वार्थ की हड्डी मांस है, कैसा तू इंसान।।163।।

निशि-वासर जुवा खेलकर, बनती चाह महान।
बिना बीज जल क्षेत्र में, कैसे फसल हो धान।।164।।

भारत की सुन्दर संसद, रावण का खंदान।
कलश स्वर्ण का संग ले, करत देश जलपान।।165।।

जीवन शुद्ध, भोजन शुद्ध, शुद्ध वस्त्र व्यवहार।
नाना, कर्म, साथ हो शुद्ध, शुद्ध बना आचार।।166।।

कृषक और मजदूर की, नहीं जगत में मान।
इनके खून पसीने से, विश्व बना महान।।167।।

सज्जन की जग पूछ नहिं, हुई पूछ विज्ञान।
आलस देकर मनुज को, किया विश्व अज्ञान।।168।।

कहने को सुविधा बढ़ी, मनुज स्वास्थ्य बेकार।
तरह-तरह के रोग का, बढ़ा आज आचार।।169।।

तन अस्वस्थ्य, मन अस्वस्थ्य, हा! अस्वस्थ्य संसार।
द्वेष, दाह, कुण्ठा का, सजा आज बाजार।।170।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भारत की पावन धरा, पावन है आचार।
स्वार्थी लोभी जन्म से, इसको किए लाचार।।171।।

जो नर करते परिश्रम, उसको कहते नीच।
रीति जग की उलट गयी, बसा मनुज है कीच।।172।।

जिसके पास है पैसा, वही आज महान।
चरित्र धर्म सब लूट गया, वैभव उदित है भान।।173।।

सोन-पक्षी था यह देश, धर्म रहा बलवान।
कत्ल किया उसका नर, बना आज शैतान।।174।।

सब धर्म-धाम थे सन्त, देते थे सद्ज्ञान।
धर्म बेंच, वैभव लिये, कमा रहे हैं नाम।।175।।

साधु का अब वेश बना, खड़े सांसद चुनाव।
दाग लगा गेरु अम्बर, कपट-काय की नाव।।176।।

सच्ची बातों से जग में, नहीं मनुज का काम।
बाँध झूठ की पोटली, सजा रहा निज धाम।।177।।

झूठ का भोजन - नास्ता, रहा झूठ का स्नान।
अंग-अंग में झूठ बसा, झूठी हाथ कमान।।178।।

कीर्तन झूठा, पूजा झूठी, झूठा है आचार।
घर में झूठा, बाहर झूठा, झूठा है संसार।।179।।

झूठा मन्दिर, झूठी मस्जिद, झूठा गिरजा द्वार।
स्वयं पुजारी चोरी करता, हृदय बसा है कार।।180।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

झूठा बनिया, दर्जी भी, झूठा सब्जी वाल।
झूठा वैद्य वकील भी, झूठा सबका माल।।181।।

स्वामी झूठा, नौकर भी, झूठा जग इंसान।
बालक-वृद्ध हैं झूठे, रही झूठ की शान।।182।।

झूठ समाया नर में, या झूठ रहा नर बीच।
इसका कोई पता नहीं, कैसे उपजा कीच।।183।।

जग के रक्षक बने हुए, मुख मुमुक्ष की बात।
मात्र अठन्नी के कारण, करें धेनु द्विज घात।।184।।

धर्म-प्रचारक विप्र हैं, लेते मांस शराब।
मुर्गे, अण्डे, अज खा-खा, वतन किये खराब।।185।।

बिना विवाह रहने का, नया चला जग शौक।
धर्म-अधर्म आन-मान, रही कहाँ अब खौक।।186।।

कलह की नौबत संसद, करते दूसरे को बदनाम।
कहीं घोटाला, गुण्डई, कहीं झूठ सत्नाम।।187।।

कुर्सी के चक्कर में, तरह-तरह की बात।
लोकतंत्र की हत्या कर, जला दिये मनुगात।।188।।

देश का राजा रावण, हिरण्यकश्यप कंस।
कौवे की है आत्मा, और खोल हैं हंस।।189।।

अमीर से गदहा भला, करता है निज काम।
मस्ती-मौज विलास से, है अमीर बदनाम।।190।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मानव से कुत्ता भला, करत नहीं है घात।
देख विपत्ति मालिक पर, भौंक कूद रिपु गात।।191।।

सोता मालिक चैन से, कुत्ता जागता रात।
मालिक की रखवार में, सदा समर्पित गात।।192।।

मानव से अच्छा रहा, सकल पशु संसार।
जगह झाड़कर दुमों से, बैठा करत बिहार।।193।।

सभी स्वयं पतित होकर, किये पतित परिवार।
एक नहीं ऐसा भैया, लम्बी लगी कतार।।194।।

बिना मांस मदिरा के, भोजन नहीं सुहात।
बिन वेश्या के रात में, नहीं नींद, सुख गात।।195।।

करता मनुज-मनुज अशन, समझ स्वयं की शान।
पाकर अवसर बेहया, करे चरित का गान।।196।।

दनुज-मनुज की चक्की, खड़ा बीच इन्सान।
हिंसक बनकर झपट रही, जस रावण सन्तान।।197।।

करबद्ध खड़ी हंसिनी, लक्ष्मी के दरबार।
नहीं समझ में आता, कैसा जग आचार।।198।।

जगह निकलती देश में, भरते पत्र गरीब।
मन्त्री जी के फोन पर, सभी जगह है सीब।।199।।

पक्षी-जीव अनाथ हैं, फँसा शिकारी जाल।
मूषक रूप धरि आव प्रभु, दूर करहुँ इह काल।।200।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

छूटत नाहिं कटु वचन, हृदय रही बनि व्याधि।
आइ नाथ बनि वैद्य तुम, दूर करहु यह आधि।।201।।

तन तेरा, मन तोर प्रभु, तोर मोर का जोर।
तन-मन तुमकों सौंपकर, हो जाऊँ भव-भोर।।202।।

प्रभु तुम रजनीकान्त हो, हृदय है मैला नीर।
निर्मल नीर कृपाल कर, दिजे बिम्ब मम पीर।।203।।

भारत की भव्य-भूमि पर, हुआ हमारा वास।
जन्म हमारा सफल हो, जब तेरा विश्वास।।204।।

राव-रंक सब हाथ प्रभु, जैसी महिमा होंय।
सेवक भी प्रभु हाथ है, करहु अनुग्रह सोय।।205।।

जिसको किये सनाथ प्रभु, करै अनाथ न कोय।
जैसे श्वेत बाल वृद्ध, बालक कबहुँ न होय।।206।।

शैल-शैल पर मणि नहीं, मोती हर गज नाहिं।
संत नहीं सर्वत्र जग, मलय न वन-वन माहिं।।207।।

प्रथम नहीं विद्या ग्रहण, द्वितीय नहीं धन-धाम।
किये नहीं कछु पुण्य तृतीय, अब चतुर्थ किहि काम।।208।।

संघ से शक्ति बढ़त हैं, होत सफल संघ काम।
जैसे चन्द्र तार संग, दूर करत तम-धाम।।209।।

एक वीर सुत उत्तम है, सौ कायर बेकार।
बिना चाँद के गगन में, तारे व्यर्थ हजार।।210।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महिमा सार्थ व्यक्ति की, चूमै सदा आकाश।
चपला चमकत जलद में, भूमि करत परकाश।।211।।

यह तन क्षण भंगुर है, निश्चित इसका नाश।
जैसे धन में दामिनि, चमकत बुझत न त्रास।।212।।

अच्छी संगति के किये, होत रंग तन दून।
गगन जलद के संग से, सुरधनु बढ़त है गून।।213।।

समय होत है काम का, समय जगत का मूल।
जैसे आय बसन्त ऋतु, खिलत डाल पर फूल।।214।।

जन पर पड़े विपत्ति से, चेहरा होत उदास।
जैसे आवत शिशिर ऋतु, झरत पात तरु वास।।215।।

समय बहुत गतिशील है, रोज परिवर्तन होत।
ग्रीष्म ऋतु के बाद ही, पावस का है स्रोत।।216।।

रीति-रिवाज समाज का, बदलत है जग रोज।
जैसे कुंआ पाट कर, चलत पम्प अब भोज।।217।।

मेरी कुछ क्षमता नहीं, फिर भी बहुत गुमान।
करहुँ दूर प्रभु अहम पट, तेरे हाथ कमान।।218।।

कृपा करहुँ प्रभु मोपर, करहु नीच कल्याण।
अवगुण देखि न बैठि रघु, करहु लाज निजप्रान।।219।।

जिसके रक्षक राम हैं, मार सकै नहिं कोय।
जैसे रहते सूर्य के, कहाँ अँधेरा होय।।220।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हानि नहीं नहिं लाभ है, रखत विहाय सम्बन्ध।
पूछ-विषान से हीन नर, ओछे नर हैं अन्ध।।221।।

जिनके स्वामी राम हैं, सर्व समर्थ सुजान।
ओछे मनुज से तोरि तनु, करत निश्चिन्त विहान।।222।।

वर वन पर्वत नद-नदी, काबे अरु कैलास।
सच कण-कण में व्याप्त है, दया-धाम प्रभु वास।।223।।

सुत-सुता दार गेह की, है कारा की प्रीत।
मधुकर वासी फूल को, कहाँ सुनावत गीत।।224।।

पशु-पक्षी नर-नारि नीच, सदा फूल-फल मात।
कटत डाल जब पेड़ की, छोड़ प्रीति उड़ि जात।।225।।

यम यातना झट लेकर, जहाँ पहुँचते पास।
छूट जात सम्बन्ध सब, होत सहाय प्रभु दास।।226।।

वानर के चरवाह बिनु, नहीं जगत में और।
केवट शबरी भालु को, मिली निकट प्रभु ठौर।।227।।

देवसुरभि को बेंचकर, अज से बढ़ती शान।
सुखी होन की आस में, बना मनुज बेईमान।।228।।

ब्राह्मण बेचत वेद को, बना भिखारी पूत।
धर्म नीति कहीं बचीं नहीं, दुनिया बनी कपूत।।229।।

निर्गुण, सगुण दो सड़क हैं, शहर एक रघुनाथ।
भिन्न-भिन्न मारग चलत, पहुँच एक ही हाथ।।230।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वैष्णव शैव न भिन्न हैं, एक मात दो पूत।
स्वार्थ बस लोलूप बने, हुए जगत के भूत।।231।।

सभी धर्म का लक्ष्य है, सत्य तत्व पहचान।
इससे प्राणी दूर हो, बेचत मान ईमान।।232।।

सत्य, न्याय, कर्त्तव्य ही, रहे धर्म के जान।
उनको मानव भूलकर, करता निज अपमान।।233।।

ऊँचा मन, ऊँची रुचि, करनी उच्च न होय।
सकल मनोरथ कल्पना, कहूँ काह सो रोय।।234।।

सकल जगत में विदित है, लंगर लपट लबार।
स्वारथ बस डूबत हैं, गहि प्रभु पार उतार।।235।।

अपत उतार पातक-पताक, मैं अपकार अगार।
कानन-कपट-लालच लपट, कौड़ी-कपूत कगार।।236।।

सब साधन से हीन हूँ, सद्गुण का अभाव।
बल बुद्धि विवेक नहिं, देहु नीच को ठाँव।।237।।

ज्ञान हीन, नहिं भक्ति उर, परनिन्दा आगार।
सब प्रकार से हीन हूँ, अब तुम्हीं लगाओ पार।।238।।

जीवरूप में देह धर, जबसे आया नाथ।
काम-क्रोध मद-लोभ हिय, सदा रखा मैं साथ।।239।।

तीर्थ धर्म का ज्ञान नहीं, जप-तप से हूँ हीन।
सुलभ सरोवर के बिना, सुखी होय क्यों मीन।।240।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तुम समान दाता नहीं, नहिं आर्त निस्तार।
जग में और जो नाथ हैं, सभी स्वार्थ विस्तार।।241।।

मुझ सम है नहिं नीच जन, हुआ जगत में कोय।
पाप की गठरी विषम है, कहूँ काह मैं रोय।।242।।

श्रुति, पुराण, स्मृति, उपनिषद्, कहत अनोखी बात।
कौशल्या-सुत रीझत ही, बचत काल से ।ात।।243।।

रघुवर तेरी कृपा से, वाम होत अनुकूल।
जैसे नीरद के घिरे, विकसत सरवर फूल।।244।।

सूकर शाकर के हते, गिरा यवन पंक-जाल।
हे राम समझ हराम को, बचा लिया क्रूर-काल।।245।।

तन का भूषण धर्म है, वाणी भूषण राम।
नर का भूषण कर्म है, शर्म भूषण है बाम।।246।।

सत्य के कारण दशरथी ने, त्याग दिया था प्राण।
उसी सत्य को भूलकर, मनुज बना है भाण।।247।।

सत्य के कारण हरिश्चन्द्र, थे बिके डोम के हाथ।
उसी सत्य को बेंचकर, हुए सभी अनाथ।।248।।

बिना सत्य के शान्ति नहीं, करो मनुज विश्वास।
सदाचार के बाण से, सभी बनत हैं दास।।249।।

सत्य एक तत्व राम हैं, करो राम से प्रेम।
कथनी-करनी एक कर, रहो मीत नित नेम।।250।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सन्ध्या-वन्दन अर्चना, कर्म परायण रूप।
साहस, धर्म, पराक्रम, हमें बचाता कूप।।251।।

वहाँ मनुज जहँ प्रेम है, शेष रहे भवकूप।
जैसे रहते भानु के, सदा रहत है धूप।।252।।

नेम प्रेम उद्यम बिना, जन्म मनुज बेकार।
जैसे बिना सरोज के, सरवर है निःसार।।253।।

राम नाम से विमुख जन, नहिं उसका कल्याण।
जैसे निकलत प्राण के, नहीं देह का मान।।254।।

रामनाम बिनु हृदय में, नहीं होत है ज्ञान।
जैसे धनुही के बिना, चलत नहीं है बाण।।255।।

ऐसा यह संसार है, रखत विषय का ख्याल।
गंग-राम को छोड़कर, निकट काल के गाल।।256।।

तृष्णा के व्यवहार से, मानव बना गँवार।
मोती चुगन की चाह में, लगी हाथ सवार।।257।।

स्वार्थमय संसार में, नहीं बचा कुछ शेष।
मनुज सुरभि को बेंचकर, रखा द्वार पर मेष।।258।।

कल्पद्रुम को काटकर, मूसर लिया बनाय।
मात-पिता को नीच कह, सब कुछ दिया गँवाय।।259।।

यहु ऐसा संसार है, जैसी जग की धूल।
शूल-सदन में बैठकर, दिखा रहा है फूल।।260।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जग दीवार है बालु की, चमकत भानु प्रकाश।
कब यह ढह जायगा, नहीं रहा विश्वास।।261।।

यह तन तृण की झोपड़ी, कास-फूस की वास।
हल्की सी चिनगारि से, जली, नहीं कछु पास।।262।।

यहु ऐसा संसार है, जैसा फूल पलास।
बाहर से सुन्दर लगे, गन्ध नहीं है त्रास।।263।।

जगत ततैया के सरिस है, धाई गिरा मृदु गूड़।
पंख रहा लपटाय गुड़, फँसा लोभ में मूङ।।264।।

मनुज बना है रासभ, लादी ढोवत मूर्ख।
यम-धोबी के दण्ड से, होश न देखत पूर्ख।।265।।

देश का राजा बाज है, जनता हुई उदास।
जीते जी तो खा गया, मरन छूट नहिं आस।।266।।

भला नहीं उस देश का, राजा है बेईमान।
केवल कुर्सी के लिए, बेचा सकल ईमान।।267।।

लोकतन्त्र का नाम है, स्वार्थ तंत्र का धाम।
अपनी-अपनी के लिए, सकल देश बदनाम।।268।।

कुर्सी पर जो बैठ गया, दिया देश को भून।
जो है भी अधिकार में, भरा निकेतन चून।।269।।

जागत-सोवत स्वप्न में, कुर्सी है सत्नाम।
गिरवी रखकर देश को, उठा रहे स्वनाम।।270।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रक्षक जो है देश का, लिया हाथ तलवार।
सबकी गर्दन काटकर, सजा लिया घरबार।।271।।

वाणी में विष घोलकर, लूट रहा संसार।
मैला कर वह देश को, मैला किया अचार।।272।।

लोकतन्त्र है नहीं देश में, सचमुच है षड्यन्त्र।
लूट-पाट में पगा हुआ है, मंत्री नेता मन्त्र।।273।।

मात-पिता भैया-भाभी, दार सुता सम्मान।
तौल दिया सब एक बाट, पैसे पर इन्सान।।274।।

जिसके सिर पर मुकुट बँधा, बना आज यमराज।
जला स्वार्थ का दीप अब, रखा नाल का नाज।।275।।

खद्दर के शुभ वस्त्र में, लगत विनीत महान।
जन-जन को ठगत फिरत, जानत सकल जहान।।276।।

काम-क्रोध मद लोभ से, बना मनुज शैतान।
इनके भागे हृदय से, होता जन कल्याण।।277।।

जर, जोरु, जमीन से ही, केवल करता प्यार।
त्याग सभी रिश्तों को, किया प्रीत ससुरार।।278।।

मात-पिता का केवल, बिटिया से अति प्यार।
बहू-बेटा का रिश्ता तो, समझ रखा बेकार।।279।।

और बहू का क्या कहना, पति बेटा से प्यार।
सास ससुर संग अरि इव, उसका है व्यवहार।।280।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वैभव है वाणी का केवल, मिटा और आचार।
मारे जाते बाल-वृद्ध, जो जग में लाचार।।281।।

जिसका खाता नमक मनुज, है निन्दा उसकी चाय।
चढ़ा ताड़ दे धोखा, भूपर देत गिराय।।282।।

जिसके हाथों में लाठी है, लेत भैंस वह हाँक।
दुष्ट, गुण्डे चोरों की, ऊँची है जग नाक।।283।।

सदाचार, सतवादी की, जग में कहाँ पुकार।
दुर्जन नीच, लबार की, आई आज बहार।।284।।

वारि-नारि वैभव लता, पड़ा मनुज तू मोह।
जैसे लोलुप स्वान ही, डण्ड खात न कोह।।285।।

बनि गँवार इस देह को, तुमने दिया गँवाय।
तजि ममता गृह राज की, उर में राम सजाय।।286।।

सदा श्रवन श्रुति संग रख, चख पद रज रघुनाथ।
बिन रघुनाथ जगत में, गहत कौन है हाथ।।287।।

जिहि रसना से रटत हैं, सदन-सदा गृह नारि।
रटो मूढ़ उस रसना, राम धाम-उद्धारि।।288।।

पर नारी अरु विषय में, यौवन दिया लुटाय।
पथ है जो कल्याण का, उससे मुँह छिपाय।।289।।

वायस-बगुला का कर्म, तजो मीत हर्षाय।
हंस वेष में वास कर, राम नाम वरषाय।।290।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जब-जब जन्म लिया भूपर, कर्म किया सुख आस।
सुख के सुन्दर जलधि में, नहीं रहा विश्वास।।291।।

मातु-पिता गुरु बन्धु सुत, सखा सनेही आस।
स्वामी एक हमार हित, नाम रूप विश्वास।।292।।

नाम रूप सुख सम्पदा, नाम कथा मुख माँहि।
नाम गति रटि राम है, राम कथा श्रुति पाँहि।।293।।

मनुजं जन्म ले धरा पर, स्नेह नहीं है राम।
जीवन व्यर्थ व्यतीत कर, किया मातु बदनाम।।294।।

सच्चा स्नेही राम का, और सनेही झूठ।
जैसे प्यास न जायते, ओस-बूँद अरु जूठ।।295।।

दंभ-द्वेष, पाखण्ड-झूठ, करत कपट को त्याग।
नाम लेत निर्मल हृदय, वहीं राम चित्त फाग।।296।।

राम-नाम को छोड़कर, नहीं आन का आस।
उसके हृदय-विपिन में, राम-सिंह का वास।।297।।

करत-धरत हर काज में, जपत रहत हरिनाम।
बैठत-उठत, निशि-वासर, रखो राम से काम।।298।।

रटत राम जो हृदय से, जीवित है वह जीव।
नतु जीवित ही है मरे, बिना प्राण बिनु पीव।।299।।

जीवन के बड़ रोग हैं, सकल वासना काम।
त्याग बिना इनके जगत, नहीं जीव विश्राम।।300।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

काम-दाम की चाक में, नर ऐसे पिस जाय।
जैसे घोंटि छछूंदर, बहु भुजंग अकुलाय।।301।।

सुन्दर नयन, सुन्दर बदन, सुन्दर सदन हजार।
राम-नाम की ओट बिन, साज सकल बेकार।।302।।

बहु तुरंग, गयन्द बहु, सेवक साज समाज।
आज्ञाकारी सुत बहू, व्यर्थ राम बिनु आज।।303।।

विनती एक हमार प्रभु, करहुँ कृपा अब नीच।
सकल सम्पदा मन सौंपकर, दूर रहूँ सब कीच।।304।।

तुम्ह अनुशासन राग-जल, लगा रहे मन-मीन।
बरषहुँ अब अमृत जलद, कृपा-वारि नहिं छीन।।305।।

जागत-सोवत स्वप्न में, सदा रहे उर ध्यान।
एक तुम्हीं दाता सबल, वृद्ध छड़ी भगवान।।306।।

नाव पड़ी मजधार में, रक्षक कोई न हाय।
आइ बेगि बन नाविक, जल-माया न बहाय।।307।।

भव-तृष्णा उर बसत है, यहीं लगत सुख-सार।
जीव-कलश है कूप में, रस्सी बन कर पार।।308।।

चश्मा देकर चश्म पर, देखत चश्मा मौन।
हंस मोर, पिक, व्याल से, नहीं मोहता कौन।।309।।

स्वास्थ्य बढ़त असोच से, घटत असोच [illegible]।
दोनों के ही त्याग से, मनुज होत [illegible]।।310।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अमल अपत्य का हृदय, अमल होत ज्यों नीर।
अंक अमल उत्पन्न से, दूर होत सब पीर।।311।।

गर्जन तेज उपल की, उत्पल नहिं घबरात।
जैसे आपद के समय, संत कहाँ बिलखात।।312।।

कुमुद बैठकर कुमुद पर, श्री संग मुस्कात।
मोर-पंख सिर ऊपर, श्याम सुखद शुभगात।।313।।

कलरव-कलरव सुनत ही, मधुकर होत सचेत।
ऋतुपति से शुभ जगत में, किधौं होगी भेंट।।314।।

गर की गर है विनाशकर, रहे सखा सवधान।
वैद्य बुलाकर जल्द ही, कर दो सही निदान।।315।।

रोगी का दुख देखकर, करो घृणा नहिं मीत।
गन्ध और दुर्गन्ध की, भाग्य भरोसे प्रीत।।316।।

गो की कृपा-अगाध से, सुन्दर गो कवि होत।
जैसे गो के उदय से, विकसत पंकज गोत।।317।।

बिना गोप के नगर का, सम्भव नहीं कल्याण।
जैसे भास्कर के बिना, होता कहाँ बिहान।।318।।

घई होता घई नीर, घई लगाओ थाह।
बिना घई के ज्ञान के, नहीं जगत में वाह।।319।।

जगत-जगत का कंत, शोषक महा फणीश।
शोषण के रोये जगत, उठत तरंग नदीश।।320।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पाथ के पाथ में रहन, बनत पाथ दुखदाय।
रजनी राजत पाथ पर, दुखी होत समुदाय।।321।।

पावक पावक तेज है, शुद्ध करत संसार।
बिनु पावक इस लोक में, जड़ जंगम निःसार।।322।।

फोक बढ़ाता फोक को, रहो मनुज सवधान।
जहाँ फोक तहँ जगत में, सर्व बना श्मशान।।323।।

सुठि जहाँ आचार है, सुठि का है कल्याण।
तुलसी, सूर, कबीर आज, पथ से हुए महान।।324।।

वनकर संसद हाता, हाता में व्यभिचार।
जिससे भारतवासी, सभी बने लाचार।।325।।

हस्ती की हस्ती बहुत, अब हो मनुज सचेत।
सदा लोभ के संग से, सबको किया अचेत।।326।।

हाटक में हाटक बहुत, अब हो वीर सुनार।
हाटक की जब परख हो, तभी मनुज होशियार।।327।।

निश्चित करो प्रतिपाद्य, बढ़ो कदम दो-चार।
निरुद्देश्य संसार में, लोलक इव बेकार।।328।।

सुन्दर बसन, सुन्दर सदन, सुन्दर तन बेकार।
विद्या और विवेक बिनु, नहीं पूछ संसार।।329।।

हिमवान सजा हिमवान, दोनों शीतल रूप।
एक सरस सुन्दर रहा, दूसर विकट अनूप।।330।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आवत ही हिमभानु के, दूर रहत है भानु।
जैसे पाप के आवते, नहीं पुण्य का प्रानु।।331।।

हौल से हौल बढ़त है, होत मनुज हैरान।
जैसे आय भूकम्पा, धरा होत परशान।।332।।

जहाँ चाह तहँ राह है, होत बुलन्दी हौंस।
सुन्दर चाहत राम की, बना दशानन धौंस।।333।।

दरिद्र से सहानुभूति, मानव का कर्त्तव्य।
जैसे व्यथित के लिए, है औषधि दातव्य।।334।।

होनहार विरवान के, होत चिकने पात।
था उदर गर्भ अभिमन्यु, चक्रव्यूह निष्णात।।335।।

प्रतिभाशाली व्यक्ति की, प्रकट पूर्व पहचान।
भोर होत ही भानु बिनु, लुप्त अँधेरा शान।।336।।

उदय होत शशांक के, होत सुवाहन रात।
आवत विद्या कण्ठ में, चमचमात शुभगात।।337।।

अधिकार छोड़ बैंठना, कायर की पहचान।
वीरों की पहचान है, मरे देश सम्मान।।338।।

अपने-अपने के लिये, सकल होत बेचैन।
दुखी होत संसार हित, सफल होत जग चैन।।339।।

ठण्ढ़ बढ़त है कुहर में, करत शस्य को घात।
जैसे बढ़त दुष्ट ही, सज्जन मारत लात।।340।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अमीर और गरीब की, खाई पकड़ी जोर।
अहंकार अभिमान का, मात्र खोखला शोर।।341।।

अश्लीलता अज्ञान से, संस्कृति का अपमान।
दधीचि, बोस, विवेक का, कहाँ गया सम्मान।।342।।

उल्लू सीधा कर्त्री, बढ़ा जगत सम्मान।
कर्त्तव्य परायणी को, समझा जग व्यवधान।।343।।

काम-क्रोध मद लोभ का, करता जो आहार।
सुखी वही है जगत में, उसकी है बहार।।344।।

कर पालन कर्त्तव्य का, जगत बनाओ ईख।
बिनु इसके संसार में, मची हुई है चीख।।345।।

जलवायु के बदलाव से, बदल डालो जनरीति।
जैसे आन्ध नाडु को, कहाँ लिहाफ से प्रीति।।346।।

खल संग व्यर्थ है विनय, कुटिल व्यर्थ है प्रेम।
कामी, क्रोधी, व्यर्थ नाम, व्यर्थ आलसी नेम।।347।।

सुख कहाँ है सेवक को, नहीं भिखारी मान।
वैभव नहिं व्यभिचार में, कटे सकल के कान।।348।।

बहन, बन्धु-वधु, सुत-दार, हैं सब सुता समान।
दृष्टि उचित नर होत ही, बनता मनुज महान।।349।।

परनारी को देखकर, जो नर मुख-मुस्कात।
मनुज नहीं वो कुत्ता है, सदा रहत हकलात।।350।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हितू प्रति कृतज्ञ नहीं, नहीं रहा वह मानव।
लोक-परलोक खोकर, बना हृदय से दानव।।351।।

घृणा करत परजाति से, सचमुच मूर्ख महान।
करत घृणा परमेश्वर, सब उसकी सन्तान।।352।।

सकल जीव का मान तो, केवल प्रभु के वास।
जैसे कुसुम की पूछ का, कारण रही सुवास।।353।।

दुर्जन को उपदेश से, बढ़त क्रोध जस आग।
छीर पिलाये सांप को, बढ़त सदा विष जाग।।354।।

गलती सबसे होत है, यह है प्राणि स्वभाव।
गलती का स्वीकार ही, उचित मनुज का भाव।।355।।

राम नाम एक सत्य है, मिथ्या सब संसार।
बिना राम के जगत का, मिथ्या सब आचार।।356।।

समय सदा गतिशील है, कहाँ करत इंतजार।
जैसे नद और नदी की, देख विकट झंकार।।357।।

प्रकृति की शोभा गयी, और गयी जलवायु।
साधन और विज्ञान से, गया सकल समुदायु।।358।।

सुख-सुविधा तलवार ले, काट लिया मनु गर्दन।
लता, पुष्प अरु तरु का, रोक दिया सम्बर्द्धन।।359।।

जनसंख्या की बाढ़ से, जगह नहीं संसार।
भोजन और मकान तक, सीमित जन आचार।।360।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पैसे की ही बाढ़ ने, हरा जगत आचार।
जैसे सरिता बाढ़ ने, हरा फसल संसार।।361।।

छोटी सरिता बाढ़ में, मचा रही ललकार।
जैसे धन सम्पन्न, खल, तोड़ देत आचार।।362।।

वातावरण जब सुन्दर, निर्मल तभी सुभाय।
अपने पैर कुल्हाड़ी, मार रहा समुदाय।।363।।

भजत सभी हैं सघन-सुख, सत्य भजत नहिं कोय।
भजते ही सत् सघन के, सुख सेवक झट होय।।364।।

विश्वास सुन्दर विहग है, जाग जात जो मोर।
अनुभव कर प्रकाश का, करत कण्ठ मृदु शोर।।365।।

जिसको भय परमात्म का, उदय होत उर ज्ञान।
फसल सूखन की त्रास से, पानी देत किसान।।366।।

दुर्जन, दुष्ट, लबार से, मन को रखो सचेत।
मिलता वक्त भुजंग को, करता शीघ्र अचेत।।367।।

तिनका देख परनेत्र, ध्यान नहीं निज आँख।
तेरे नेत्र शहतीर हैं, प्रथम उसे तू भाख।।368।।

भला जगत में उसी का, अच्छी जिसकी आय।
खर्चा करत हिसाब से, अच्छी लेत बचाय।।369।।

नीर-छीर अलगाव में, उचित नहीं संकोच।
रहत सदा भयभीत जो, बढ़ा रहत उर शोच।।370।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जग की उत्तम उपलब्धि, सद्गुरु की पहचान।
बिना सद्गुरु जगत में, सम्भव नहिं कल्याण।।371।।

रामनाम की भजन बिनु, जीवन है बेकार।
जैसे बिन संघर्ष के, जंक लगत तलवार।।372।।

प्रकृति से विद्यालय का, सुन्दर हो सम्बन्ध।
स्वस्थ रहें बालक सभी, मिला चले जग कन्ध।।373।।

विद्यालय दूर शहर से, जहँ कोलाहल शून्य।
नैतिक मानव सेव से, छात्र कमायें पुण्य।।374।।

नैतिक शिक्षा आवश्यक, इन्हें पढ़ावें जोर।
इसकी हो शान्त परीक्षा, रहे विद्यालय भोर।।375।।

प्रथमा आचार-विचार, द्वितीय रहे सद्ज्ञान।
ऊँच-नीच का भेद भुल, सब बन जाँय महान।।376।

छात्र-छात्रा का विद्यालय, बनें दूर ही दूर।
ब्रह्मचर्य का पालन, करें छात्र भरपूर।।377।।

सम्भव है मिडिल कक्ष तक, सह-शिक्षा दी जाय।
तत्पश्चात् दूर-दूर की, शिक्षा उचित बुझाय।।378।।

शिक्षा में तकनीकि ज्ञान का, सदा रहे सम्मान।
बिना तकनीकि ज्ञान के, शिक्षा का अपमान।।379।।

कुछ कार्य विद्यालय भवन, करें छात्र सब मील।
लघु कुटीर उद्योग की, गड़ी रहे अब कील।।380।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शिक्षा में पहली सूची, रखे ध्यान रोजगार।
ताकि कोई छात्र न ऐसा, पढ़-लिख हो बेकार।।381।।

खेल-कूद व्यायाम का, हो शिक्षा सम्मान।
पढ़-लिख कर बालक सभी, बने पुष्ट बलवान।।382।।

सबल शरीर, सबल मन का, बालक बने उदार।
अशन-वसन, रहन-सहन से, अच्छा हो आचार।।383।।

राष्ट्र प्रेम सिर ऊपर, रख चलना है आज।
फिर कदम बढ़ाकर इच्छा, पूर्ति करो हे ताज।।384।।

जीवन के चार आश्रम, सदा रहे यह ध्यान।
ऐसा जीवन जीने से, बढ़ता है जग मान।।385।।

किसी धर्म से घृणा नहीं, सबका है सम्मान।
नदिया एक घाट बहुतेरे, इसका है प्रमाण।।386।।

धर्म सभी का लक्ष्य रहा, सत्य और ईमान।
नीति परिश्रम वृद्ध का, सब करते सम्मान।।387।।

ब्रह्मचर्य से सुधर जात है, जीवन का संसार।
रत्न एक अनमोल ही, निहित सभी आचार।।388।।

विद्यालय बीच सजी हो, दुल्हन बन प्रकृति।
लता पुष्प मनमोहक, चित्ताकर्षक आकृति।।389।।

भ्रमर मधुमक्खी मधुकरी का, चलता हो सुन्दर गान।
कोयल, बन्दर, बिल्ली सब, चढ़े डाल हरषान।।390।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देख बाल रुचि छात्र की, सदा बढ़ाओ काम।
ताकि तन-मन-धन रत हो, अपना कर ले नाम।।391।।

शिक्षक हो उच्च कोटि, कर्म करे वह ऊँचा।
इसमें यदि कमी मिले, तो मारो सिर पर कूँच।।392।।

नहीं समझ बालक को, दुनिया की कैसी रीति।
अनुगामी बन अध्यापक का, करत सभी से प्रीति।।393।।

अनुकरण कर शिक्षक का, छात्र बढ़ाता पाद।
शिक्षक ऐसा चाहिए, छात्र न हो बर्बाद।।394।।

अच्छे-अच्छे कथन से, सरै न एकौ काम।
जैसे मीठा मुँह नहीं, गुड़ का लेते नाम।।395।।

भोजन कम काक चेष्टा, से शिक्षक भरपूर।
ताकि बालक बन सके, करत अनुकरण शूर।।396।।

शिक्षा ऐसी चाहिए, बालक समझे खेल।
स्वयं कदम बढ़ाकर ही, इससे कर ले मेल।।397।।

स्वाध्याय तर्कबुद्धि की, कथा सुनाओ मस्त।
जिससे बालक उत्सुक हो, रखले इनको हस्त।।398।।

रचना और संकल्पना, नाटक खोलो फाट।
जिससे सज जाय जगत में, बालक के डर हाट।।399।।

बस्त्र साधारण पहन पर, सामान्य करो व्यवहार।
ताकि बालक उर बसे, यही मान्य आचार।।400।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बालक के सम्मुख करें, न कभी झूठ व्यवहार।
बालक के हृदय बसा हो, शिक्षक ईमानदार।।401।।

जहाँ कहीं भी जाँय, रक्खें इसका ध्यान।
आदर्श शिक्षक मैं हूँ, करना है कल्याण।।402।।

सदा रखो उर ध्यान, तुम यहाँ खड़ा है छात्र।
सचमुच उसे बनाना है, कंचन जैसा पात्र।।403।।

जागत सोवत स्वप्न में, सदा रखो यह ध्यान।
छात्र संग इस देश का, करना है कल्यान।।404।।

चन्दन शीतल जगत में, आगे है शशि अंग।
सचमुच शीतल करत है, दया, धर्म सत्संग।।405।।

नीच व्यक्ति के संग से, होता भ्रष्ट विवेक।
उत्तम का तो संग ही, करत मनुज अभिषेक।।406।।

सज्जन के संसर्ग से, बढ़त चित्त का मान।
पद्मपत्र पर वारि ज्यों, मुक्ता बनत महान।।407।।

संत दरश के योग से, संचित होता पुण्य।
सत्संगति जगतीर्थ हैं, सदा विकसता गुण्य।।408।।

तीर्थों का फल मिलत है, बहुत दिनों के बाद।
संत दरश का रूप तो, तुरत करत आबाद।।409।।

संतों के सत्संग से, खल भी सज्जन होय।
जैसे संगति साधु की, वाल्मीकि ऋषि होय।।410।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कुबुद्धि और असत्य को, दूर करत सत्संग।
मान बढ़ावत जगत में, पाप करत सब भंग।।411।।

संत समागम जगत में, नहिं कबहू विसरात।
बिछुरत संत फकीर के, जियत ही मरि जात।।412।।

जीवन में बहुपुण्य से, मिलत राह सत्संग।
जहाँ मिलन सत्संग का, चित्त होत नारंग।।413।।

दुनिया में सम्बन्ध बहु, है सत्संग महान।
इसकी जब जिज्ञासा हो, तभी होत कल्याण।।414।।

कांचन के संसर्ग से, होत कांच द्युतिमान।
वैसे संत प्रभाव से, मूर्ख होत बुद्धिमान।।415।।

तीनि लोक की सम्पदा, रही सन्त के पास।
जैसा वनत विचार है, वैसी मिलत सुवास।।416।।

उदय होता रवि रक्तिम, रहत रक्त ही अस्त।
वैसे सन्त विपत्ति से, नहीं होत है त्रस्त।।417।।

सज्जन अपने कर्म से, सदा होत सिरताज।
जैसे बिन अभिषेक के, सिंह करत वन राज।।418।।

अपर विपत्ति को देखकर, द्रवित होत हिय सन्त।
परहित के ही कारणे, देह धरत रवि कन्त।।419।।

मनसा वाचा कर्म से, सन्त पुण्य की खान।
दूसरे के गुण पुण्य की, करत रहत बखान।।420।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मान और अभिमान से, सन्त रहत है दूर।
सुनत प्रशंसा स्वयं की, हृदय होत है चूर।।421।।

मनसा वाणी कर्म से, एक रूप है सन्त।
किये हुए उपकार को, कबहुँ न भूलत कन्त।।422।।

सागर अपने रत्न से, बना देत विन्ध्याचल।
चन्दन अपनी गन्ध से, भरत धरा का आँचल।।423।।

प्राणी के उपकार सम, नहीं जगत में धर्म।
पर पीड़ा अभिमान से, अधम नहीं है कर्म।।424।।

पुष्प गन्ध नहिं लेत है, भानु लेत नहिं ताप।
सदा जगत कल्याण हेतु, संत समागम आप।।425।।

मित्र-शत्रु नहिं सन्त का, सम है करत उद्धार।
जैसे भास्कर किरण संग, बनत नहीं गद्दार।।426।।

सभिन्न-भिन्न प्रकार से, योगी करत अचार।
उसका तो उद्देश्य है, केवल पर उपकार।।427।।

बिना रोग दुख शोक के, सदाचार का रूप।
सदाचार उपवास से, नर होता है भूप।।428।।

विजय सदा है सत्य की, और झूठ की हार।
देर भले हो सत्य की, सम्भव नहिं दुत्कार।।429।।

धन विद्या अरु मान से, जन्म सफल नहिं मान।
सदाचार के वान से, समझो सफल निशान।।430।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सत्य से रक्षित धर्म है, विद्या रक्षित योग।
रूप रक्षित है स्वच्छता, वित्त वंश संयोग।।431।।

वशीकरण है जगत का, दान एक शुभ मन्त्र।
सभी व्यसन के दूर का, सुन्दर है यह तन्त्र।।432।।

श्रेष्ठ रहा दाता जगत, नहीं कृपण धनवान।
प्यास बूझत कूपे जलम्, सागर संग गुमान।।433।।

सचमुच ब्रह्मदान ही, सब दानों का मूल।
कंचन रजत कपूर को, पीछे ही तू भूल।।434।।

मरते को जीवन दे, प्यासे को दे पानि।
दे भूखे को भोजन, वहीं श्रेष्ठ है दानि।।435।।

दाता के शुद्ध भाव से, सफल होत है दान।
देत समय यदि दर्द है, नहीं दान की शान।।436।।

बाढ़ देख घर दाम का, खुले हाथ दो दान।
जैसे पानी नाव का, फेंके ही कल्यान।।437।।

गुण की पूजा सब जगह, पितृवंश बेकार।
जैसे पूजा राम की, दशरथ की दुत्कार।।438।।

गुण को पूजत सकल नर, नहीं पूजत है रूप।
जैसे पूजत पवनसुत, कामदेव दे कूप।।439।।

अनुचित-उचित का ध्यान रख, जगत करो व्यवहार।
अपने संग जो चाहते, करो वही आचार।।440।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रहा सुहावन मम वतन, रत्नों का संसार।
वीर रत्न के प्रसव से, सजा दिया बाजार।।441।।

हरिश्चन्द्र अरु कर्ण का, दान हेतु सम्मान।
विश्व में नहीं हुआ है, कोई अस खनदान।।442।।

वशिष्ठ, विश्वामित्र को, गुरु कहे भगवान।
जिनके बल पर चलत है, सृष्टि सुघर निर्माण।।443।।

नन्द विवेका पैदाकर, हुआ गर्व का काम।
जिसने पहुँच शिकागो में, किया विश्व गुरु नाम।।444।।

राणा शिवाजी जैसे, हुए वीर बलवान।
मातृभूमि के लिए घास की, रोटी खायी छान।।445।।

गोविन्द के पुत्र हुए, जिनका नाम महान।
गये चुने दीवार में, नहीं घटाये शान।।446।।

सुखदेव, भगत, आजाद, किया प्राण का त्याग।
मातृभूमि की सेवाकर, सजा दिया निज भाग।।447।।

सत्य में बसता ब्रह्म है, सत्य श्रेष्ठ है धर्म।
कोटि यज्ञ अश्वमेध भी, नहीं सत्य जस कर्म।।448।।

शोभा समझो कण्ठ की, सत्य और मधु बोल।
सत्य रहे पर मृदुल नहिं, कहो न [illegible] खोल।।449।।

भानुन विकसत कमल है, खिलता कुमुद मयंक।
सत्यन शोभित व्यक्ति ही, बसत नाक के अंक।।450।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रोग को झोला वैद्य है, नेवला झोला नाग।
आलस झोला छात्र का, दीमक झोला बाग।।451।।

जननी जन्मभूमि है, रहा पुत्र मैं छोट।
बड़ा हुआ मैं बैठ अंक, इसी धूल में लोट।।452।।

कल्पलता सम मातृभूमि, रत्नों का आगार।
सदा समर्पित होकर हि, चलो बिना व्यभिचार।।453।।

अंग-अंग में दीप्य है, मातृभूमि का रूप।
मृत्युलोक का स्वर्ग है, भारत रूप अनूप।।454।।

सुर नर मुनि सब एक संग, गाते सुन्दर गीत।
जननी भारत धन्य है, धन्य है मोहक प्रीत।।455।।

भारत धरती देव की, देवनदी का वास।
महके उर आँचल में, सदा पुष्प विश्वास।।456।।

कंचन के से देश से, उत्तम अपना देश।
जैसे मखमल छोड़, सन्त, करत लंगोटी वेष।।457।।

मातृभूमि से प्रीति नहिं, गौरव न सम्मान।
धनधान्य से पूर्ण भी, व्यर्थ जीव की शान।।458।।

मातृभूमि के लिए वीर, त्याग सके नहिं प्राण।
मात-पिता का रहना, अच्छा निःसन्तान।।459।।

रहते प्राण शरीर में, तजों नहीं निज देश।
जैसे तजत न मेष है, सुन्दर अपना केश।।460।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मातृभूमि के प्रेम बिन, जीवन है बेकार।
पत्थर का दिल लेकर, प्राणी है गद्दार।।461।।

नमन तुझे है मातृभूमि, मुझको दे वरदान।
तेरे वपु को सौंपकर, बन जाँऊ इन्सान।।462।।

दुर्गम पर्वत झाड़ से, डरो नहीं हनुमान।
गरज-गरज कर सिंह से, सदा बढ़ाओ शान।।463।।

सप्राण रहें या जायें, सहो नहिं अपमान।
शीश चढ़ाकर मात को, बनो वीर भगवान।।464।।

सरित शैल की अंक में, शोभित देश महान।
जीवन त्याग दधिचि ने, अस्थि किया था दान।।465।।

सुन्दर हार सरित का, सदा बढ़ावत ललित।
लता विटप बहु रूप में, सदा रहत है फलित।।466।।

कहीं आम, अंगूर कहीं, कहीं चमेली फूल।
गन्धी मधुर सुगन्ध से, हरत हृदय का शूल।।467।।

कोकसार की लोकनाद, गूँजत है चहु ओर।
सरस समीर बसन्त से, सदा रहत है भोर।।468।।

मेह मगन है गगन में, नग्न नृत्य कर मोर।
कोयल कू कू बोलकर, रूप देत घनघोर।।469।।

सरवर बीच में हंस सब, मोती चूँगत धाय।
कौवा, कपि, मृग भालु वन, मोहत पैर जमाय।।470।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कमल रक्त पलाश रक्त, और गुलाब है रक्त।
कली पत्र वन रक्त हैं, सभी रक्त के भक्त।।471।।

बावरी तू सम्भल जा, बिखरा तेरा अंचल।
नयन गुणी छवि लूटकर, बना रहे हैं चंचल।।472।।

शीतल शशि सुखद, बढ़ा रही छवि नीर।
मानो प्रतिच्छाया पड़त, जलत दीप नदि तीर।।473।।

नाच रहीं है चन्द्र किरण, तरुओं के चढ़ डाल।
देख-देख कर भागता, मानो जीवन काल।।474।।

सिंह, शार्दूल , विहग की, नींद उड़ी तत्काल।
मानो प्रलय समीप है, चढ़ा सैन का काल।।475।।

मगन सुधाकर कुमुद संग, क्रीड़-काम नहिं अंत।
सकल रात अब सुखद है, उसकी आज बसन्त।।476।।

बहुत बली है एकता, रिपु को देत भगाय।
जैसे तारा संग शशि, तम को दिया डराय।।477।।

चकवा चकवी व्याकुल, करत खोज निज नाथ।
जैसे आवत रात ही, द्वार लगत नहिं हाथ।।478।।

देखो पौधे शैल के, हर्षित होत सुजान।
जैसे विपदा आवते, सन्त हृदय नहिं तान।।479।।

सरिता झरना एक संग, निर्मल नीर सुहाय।
जैसे जग में संत बसि, स्वच्छ हृदय हरषाय।।480।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नीच-ऊँच को संग रख, पर्वत है मुस्कात।
जैसे मित्र कुमित्र से, संत नहीं घबरात।।481।।

देवदारु बहु वृक्ष तो, लम्बे खड़े विशाल।
जैसे धैर्य सुजान ही, राखत है जग-पाल।।482।।

फल-फूलों से वृक्ष सब, सबको करत सलाम।
मानो द्वेष घमण्ड पर, जग को देत लगाम।।483।।

घन घिरकर नभ गर्जत, शीतल बहत समीर।
मानो सैनिक संग ले, चले युद्ध को वीर।।484।।

खड्ग-बीजु चमकत गगन, बरस रहा घन घोर।
बूँद बाण का रूप ले, चढ़ा शत्रु पर जोर।।485।।

प्लवगा टर-टर करत हैं, अवनी नाचत मोर।
पावस ऋतु की राज पर, कृषक मनावत भोर।।486।।

हल-बैलों को साथ ले, चले कृषक निज खेत।
भींग-भींग कर खेत पर, सुधा-बीज बो देत।।487।।

हरि-मीन झिंगुर संग, गावत हैं शुभ गीत।
बड़ा रहा सौभाग्य तन, आये वर्षा मीत।।488।।

चूहा चींटी विहग, नकुल, दुखी हुए इस प्रीत।
जगत पिता ने दिया है, क्यों ऐसी यह रीत।।489।।

खुशियों का श्रृंगार ले, बरषत पानी मेह।
सावन मास की लगन में, बढ़ा हृदय का स्नेह।।490।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लाग पुनरबस नखत अब, धरति सुखी सब जीव।
तृषित पुकारत चातकी, कहाँ रहे हे पीव।।491।।

भादों का अब मास है, रात अँधेरी घोर।
विरही तरशत प्रिय बिना, हृदय शूल है मोर।।492।।

सुन्दर बाली धान की, लगत संग रवि हेम।
कृषि निरावत कृषक सब, सींचत पानी नेम।।493।।

मास रहा सुख अश्विनी, कृषक घूमत स्व खेत।
रोवत वही किसान है, जिसके सिर पर रेत।।494।।

मास अगहन का आया, चलै कटाई धान।
घर में अन्न की पहुँच से, बढ़ा कृषक का शान।।495।।

छोटे वर्ग मजूर को, मिला धरा पर काम।
सुखी सभी हैं एक संग, देश नहीं बदनाम।।496।।

पैदा हुआ जो खेत में, लूट लिये सब बाज।
कृषक विचारा क्या करे, अन्न नहीं घर आज।।497।।

आया माह अब पूस का, बढ़ा पाल का कोप।
रात कटै किमि कृषक की, है लिहाप का लोप।।498।।

माघ मास के आवते, ठण्ड भई जस बाज।
वो क्या जाने ठण्ड दुख, जिनके सिर पर ताज।।499।।

आया फागुन मास अब, होली पर्व समीप।
वहाँ हर्ष विषाद नहीं, रहा ऋतु महीप।।500।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कहीं काम कहीं होली, जरत दाह से गात।
जैसे पीला होय-होय, झरत वृक्ष से पात।।501।।

चना मटर अरु जौ की, फसल हुई तैयार।
कोकिल बोलत मधुर मधु, हरत हृदय संसार।।502।।

माह आया अब चैत का, मधु की हो बरसात।
रहा खुशी का मान अब, फूल से सुन्दर गात।।503।।

सहज भाव से वृक्ष लता, रहीं यहाँ पर फूल।
मंजरि आम में आकर, हरत क्षणिक भव शूल।।504।।

मधुकर मधु की लोभ में, लता पास सटि जाय।
पुष्प देख मधुमास का, प्राणी उर हरषात।।505।।

नहीं मान है व्यक्ति का, रहा गुणों से हीन।
जैसे निन्दित पुष्प है, रहा गन्ध जो छीन।।506।।

खिली कली को देखकर, कली रही मुस्काय।
कल ही इसको तोड़कर, सिर में लूँगी लगाय।।507।।

श्याम रात को देखकर, श्याम कहाँ भयभीत।
श्याम दूर कर सकल नर, सदा बढ़ाते प्रीत।।508।।

अक्रूर मन निर्मल हुआ, जैसा गंगा नीर।
देखत मधुर बसन्त ही, दूर हुई सब पीर।।509।।

लाल पुष्प को देखकर, लाल गये हिय मोह।
क्यों न बारह मास ही, रह बसन्त की सोह।।510।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मधु में मधुर प्रसून तो, बढ़त रहत दिन दून।
बिना मधुर संसार में, सकल पदारथ सून।।511।।

सुनत कनक का नाम ही, दौड़ा तुरत सुनार।
कनक रखा जब हाथ में, सचमुच रहा धतार।।512।।

मधु का नाम सुनत ही, वैद्य दौड़कर जाय।
मधु को पर से हाथ ही, मदिरा देख लजाय।।513।।

मधु के आवन से जगत, मधु का हुआ प्रसार।
कोकिल मोर, संग सकल नर, सुन्दर लेत बहार।।514।।

नाम रूप है चन्द्र का, जीव मणि चन्द्रकान्त।
चरण-कमल में नाम के, द्रवित होत है प्रान्त।।515।।

विषय-कीच, मन-मक्खि से, दूर नहीं है होत।
कृपा-रज्जु वंशी पद से, दूर करहु दुख स्रोत।।516।।

नमः तुझे दशरथ नन्दन, कृपा करहुँ इस दास।
कपटी, कुटिल, गरुर को, एक तुम्हारी आस।।517।।

करौं अर्चना केहि विधि, हमें नहीं है ज्ञान।
भ्रमर पुष्प चन्दन सर्प, किये जूठ कर पान।।518।।

धवल धाम काय यह, दिये कृपा कर नाथ।
डूबत भवसागर मंह, गहि प्रभु दुर्बल हाथ।।519।।

चीर दिये द्रुपद-कन्या, दिये गिद्ध निज धाम।
नहीं जगत में और मम, पड़ा चरण हे राम।।520।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अवगुण मेरा भूलकर, करहुँ राम कल्याण।
जैसे पारस अयश को, कंचन करत महान।।521।।

मैला वारि नाले में, बहत रहत हे राम।
मिलत जाइ जब गंग में, देत गंग ही नाम।।522।।

आठ पहर बत्तीस घड़ी, छूटत न मोह बयार।
दम्भ द्वेष पाखण्ड में, भूल गया प्रभु प्यार।।523।।

तन सोहत है पीत-पटु, चन्दन सोहत भाल।
भुज-भुजंग पतिराम से, दूरहुँ ते डर काल।।524।।

सुन्दर जटा है माथ पर, मृग ज्यों सुन्दर नयन।
चारु-चाप है कन्ध पर, देखि छिपत है मयन।।525।।

वदन मयंक लोल कपोल, अधर अमीरसवान।
माल-मनोहर गले में, कर में शोभत बान।।526।।

सुन्दर वदन कोमल तन, पैदल चलत हैं राम।
देखि-देखि शोभा-सदन, सुखी होत मन धाम।।527।।

पकड़ सरस डाल द्रुम की, खड़े सुशोभित राम।
जैसे मूर्त रूप में आकर, खड़ा हुआ है काम।।528।।

बूँद स्वेद की लसत है, रामचन्द्र की देह।
मानो शबनम बूँद ही, लसत पात की नेह।।529।।

श्याम गौर के बीच ही, दामिनि सुन्दर नारि।
पद्म-पदों को छुवन में, सकुचत हैं कँट झारि।।530।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आगे-आगे राम हैं, पीछे कुँवर सौमित्र।
भारति कहति लजाति है, अग्रज-अनुज अमित्र।।531।।

चन्द्रमुखी है राम संग, रूप राशि की खानि।
खंजन नयन पर रीझि कर, रति है कराति बखानि।।532।।

जटा मुकुट, बलकल बसन, चाप बान है पानि।
धन-दामिनि के रूप का, भारति करति बखानि।।533।।

ऋतु कंत वसन्त हँसत, रति औ रतिपति अंग।
तापस राम को देखकर, मति सुन्दरता दंग।।534।।

मोहित हैं सब ग्राम बधु, जनकसुता के रूप।
जैसे रजनी चन्द्रिका, गंधी फूल अनूप।।535।।

पूछति ग्राम वधूसिय, साँवरे वर्ण सौ कौन।
तिरछे नैन बताय कर, रहीं सिय मुख मौन।।536।।

संग चलत सौमित्र हैं, निरखत चरण-सरोज।
कोकसार जस पूस का, झुका रहत है रोज।।537।।

शोभित सीता रघु संग, हँसी गयी हिय हार।
स्नेह सरोवर रवि उदय, विकसित कंज बहार।।538।।

गये, लखन है वारि को, वारि सरद सरोज।
धरी बैठि हम देख लें, आवत दीख मनोज।।539।।

श्रम-सीकर मैं पोंछ कर, तक तक करु बयारि।
लखि सीता के पद-दरद, चले नयन सो वारि।।540।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बालक वृद्ध राव रंक, खग से मृग सब जीव।
देखि राम को धावत, जैसे पपिहा पीव।।541।।

कमल नयन विधु-वदन, करत भूमि पर शयन।
सुर नर, नाग, विहंग मृग, बहत विरद दुख नयन।।542।।

पृथ्वी करत सकोच है, शैय्या दूँ मैं कौन।
मृदुल रूप धरि आय कर, लेटत नीचे मौन।।543।।

चम्प चमेली कमल फूल, लाय धरी तर पाँव।
देव सराहत मौन सुख, धनि धरती बस ठाँव।।544।।

लाई हुताशन निशिचर, दिये पूँछ को फूँक।
धधक उठी लंका पुरी, महावीर की हूँक।।545।।

बालधि रूप विभीषिका, धूम रही गढ़ लंक।
निशिचर विकल कराहत, जनु लागत हैं डंक।।546।।

धूम विकल चँहु ओर नर, जैसे आँसू गैस।
इधर-उधर कूदत-फिरत, जैसे कूदत भैंस।।547।।

हाट-बाट अरु कोट में, आग दिये हनुमान।
राक्षस आँखिन अंध बन, धावत बस अनुमान।।548।।

नाथ-नाथ कह प्रिया-प्रिया, बाप-बाप चिल्लाहिं।
मुझे बचाओ भ्रात अब, भागत, जलत कराहिं।।549।।

कहाँ जाऊँ कहँ ठाँव है, लगी आग हर गाँव।
बाल-वृद्ध सब एक संग, गाली देते राव।।550।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वृद्ध सब भागकर, पहुँचत बाड़व तीर।
ज्वालामुखी की आग अब, धधक रही है नीर।।551।।

सास ससुर पति-पत्नी के, गये संग अब छूट।
त्राहि त्राहि कर भागते, जैसे गये हों लूट।।552।।

जल को ललाल विलखात, काया जलत परात।
बन्ना-बन्नी खो गये, पहुँची कहाँ बरात।।553।।

रावण ढूढंत मन्दोद, मन्दोदरि दसशीश।
तमीचर अरु तमीचरी, भागत ओर नदीश।।554।।

इन्द्रजीत खोजत सुलोचना, सुलोचना भी मेघनाथ।
भागत जहाँ के तहाँ, होकर सभी अनाथ।।555।।

गयी रोशनी आँख की, अंधे हुए कपूत।
धन्य वीर है पवनसुत, जन्मा धीर सपूत।।556।।

ज्वललाट के तेज से, त्राहि-त्राहि की आह।
कहत सभी एक दूसरे, कहाँ गये हो नाह।।557।।

भरा अध-उध है बन्दर, दशो दिशा है बन्दर।
हृदय प्रकट है बन्दर, खड़ा सामने बन्दर।।558।।

भरी खोरि-पौरी है बन्दर, अटनि अगार है बन्दर।
जहाँ जाऊँ है बन्दर, मनो त्रिलोक हैं बन्दर।।559।।

भोजन करत है बन्दर, पानी पियत है बन्दर।
बात करत है बन्दर, सोवत सपने बन्दर।।560।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सारी लंका बन्दर, गूँज रहा गढ़ माहि।
चखा विष दशकन्दर, राक्षस कहत पराहिं।।561।।

दुख से सब कुछ मिलत है, सुख से मिलत न राह।
जैसे कर कांटा चुभत, सफल फूल की चाह।।562।।

दान दया बिन धर्म के, जीवन हुआ बेकार।
मद-मत्सर के वास से, सकल बना बेतार।।563।।

जहाँ मोह, तँह पाप है, पाप नसै त्रैलोक।
अन्त समय यमदूत संग, व्याज देह सब पोंक।।564।।

साँठ रहा जब गाँठ में, जग सारा होय मीत।
जैसे मधु के आवत, कोयल करती प्रीत।।565।।

सुख के सब साथी बने, दुख में नहिं पहचान।
जैसे संग रहीम के, सबका रहा ईमान।।566।।

जहाँ अर्थ, जग भ्रष्ट है, जहाँ मान तहँ गर्व।
जहाँ क्रोध तहँ शोक है, दुखदायी सब पर्व।।567।।

मानव-मानव एक है, छुआछूत है आग।
जनक जगत्पति एक है, समझ करो अनुराग।।568।।

बढ़ती हिंसा देखकर, चिन्तित है संसार।
हिंसा का कारण रहा, अर्थ मोह व्यभिचार।।569।।

हिंसा बढ़ती देखकर, दिया अक्रूर रोय।
क्रोध-लोभ के बीच में, सावित बचा न कोय।।570।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सारे रिश्ते मिट गये, अर्थ बना भर्तार।
जिसकी संगति अर्थ की, वही जगत कर्तार।।571।।

दुख पीछे सुख खान की, मंजिल छिपी अपार।
ग्रीष्म-तपन के बाद ही, पावस का संसार।।572।।

आप-आप के कारने, दुखी हुआ संसार।
आप मेटि जीवन बनै, यही शूल-सरदार।।573।।

विनय जान की शान है, विनय मनोहर आन।
बिना विनय संसार में, किसे मिला सम्मान।।574।।

लोभ-क्रोध मद तीन ही, मानव के अरि घोर।
इनसे दूरी बर्तते, करता नृत्य है मोर।।575।।

तीनि लोक सत्खण्ड में, रही राम की आन।
बिना राम के सकल सुख, समझो जैसे बान।।576।।

गुरु धोबी शिष्य वस्त्र है, पल-पल काढ़ै मैल।
साबुन सर्फ लगाय के, करत हिमालय शैल।।577।।

गुरु तो ऐसा चाहिए, जैसा चतुर किसान।
खर-पतवार सब दूरकर, फसल लगावत पान।।578।।

विस्तृत यह संसार है, प्रेम अनोखा मन्त्र।
बिना प्रेम के ज़गत का, मनुज कहाँ स्वतन्त्र।।579।।

धन-वैभव के तेज से, कहाँ होत सुख सार।
सुख बसता उस जगत में, जहँ सन्तोष अपार।।580।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पैसे का सुख जगत में, समझो है हिय-बाज।
धनी-मनी है वीर वह, नेह करत रघुराज।।581।।

लम्बा-पतला व्यक्ति का, मानों मत विश्वास।
रहत सफेदा बहुत बड़, लकड़ी है बकवास।।582।।

जग में रहत समर्थ नर, करत नहीं उपकार।
कूप बुझावत प्यास को, जलधि होत बेकार।।583।।

रात का दीपक चन्द्र है, दिन दीपक है भानु।
कुल का दीप सपूत है, सदा बढ़ावै मानु।।584।।

पति पत्नी का छाँव है, रात चोर का छाँव।
तरु जीवन का छाँव है, प्राणि-जगत का ठाँव।।585।।

मात-पिता निधि पुत्र है, गणित का निधि है सूत्र।
प्राणि निधि शुभ चरित्र है, इन बिनु जगह है कुत्र।।586।।

पवन जगावत आग को, मोह जगावत क्रोध।
लोभ जगावत पाप को, कहत अक्रूरा शोध।।587।।

सच मृग गाय अमोल है, जो कोई पालै जानि।
पय गोबर अरु मूत्र से, नर हो जात सयानि।।588।।

बाँस बैल सच गाय ही, हैं किसान हथियार।
ये घर जिसके बसत हैं, सदा रहत सरदार।।589।।

राजा ऐसा चाहिए, जैसा भास्कर भाव।
बरषत नाचत सकल जन, करषत थाह न पाव।।590।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वास्थ्य परम निधि जगत का, स्वास्थ्य बिना सब सून।
तन-मन से जो स्वस्थ है, होत खुशाली दून।।591।।

चिन्ता है ज्वालामुखी, तन-मन का है शूल।
जिसके उर मे बसत है, मिटत खुशी का फूल।।592।।

चिंन्ता से नहिं चैन चित्त, रही विश्व वन ज्वाल।
पाप रूप में पनप कर, सिर का खाती बाल।।593।।

हलचल है ग्रहकक्षा की, है अभाव का रूप।
युवा को जः बना-बना, चिन्ता देती कूप।।594।।

चिन्ता व्याधि अपार हैं, नहीं रहा उपचार।
जिसके यह माथे पड़ी, ढूढ़ंत मृत्यु न पार।।595।।

चिन्ता के पाले पड़े, व्यक्ति हुआ जस सूत।
ऐनक दे ढूढ़ंत यम, कहाँ गया वह भूत।।596।।

करनी का फल मिलत है, लाख करो उपचार।
जैसे सोते कृष्ण भी, पारिधि बने शिकार।।597।।

बन अमीर तुम सज्जन, करो न पर अपमान।
खून पसीना एक कर, लघु ने किया महान।।598।।

घृणा करो न नीच कहो, लघु हैं रजक समाज।
निर्मल चादर बिछा-बिछा, सदा बढ़ाते साज।।599।।

लघु जीना हैं महल के, जिससे छत पर जाय।
बिनु लघु संसार को, लकड़ी दीमक खाय।।600।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जिसकी दाढ़ी बीच में, अगल-बगल है सून।
उसके मरे न रोइये, वह घर का है वह खून।।601।।

छाती पर है केश नहीं, सचमुच है जग भार।
ऐसे नर का स्वप्न में, करो नहीं इतवार।।602।।

कामी क्रोधी लालची, करो मिताई नाहिं।
दिल-दर्बा में बैठ-बैठ, दिन डकैत बन जाहिं।।603।।

जहाँ नारि तहँ नाश है, जहाँ नारि तहँ वास।
नारी अन्धी जाति है, सदा भला उपवास।।604।।

आगे मधु पीछे खड्ग, ले नर कहता बैन।
बिन त्यागे अस मित्र को, वासर-रैनि न चैन।।605।।

सज्जन मधु को राखिये, बिनु मधु है सब सूल।
मधु के गये न उबरे, तृषा नशेड़ी फूल।।606।।

हरि हरि है ठण्ड का, हरि को रखो सम्भाल।
पूस मास में हरि बिना, खड़ा बगल में काल।।607।।

केवल सुन्दर नाम से, नर नहिं होत महान।
कहत धतूरा को कनक, कहाँ कनक जस मान।।608।।

सखा सारंग का साथ कर, सारंग से कल्यान।
रहित सारंग के विप्र, मेघ, मधु कवि बेजान।।609।।

सार एक हथियार है, इसको रखो सम्भाल।
बिना सार के जगत में, साधु वीर कंगाल।।610।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सारंग नभ शीतल करत, नृत्य करत सारंग।
सारंग बिलोकत गगन में, तृषा बुझावत अंग।।611।।

देख-रेख अपनी रही, बढ़ा जगत में आन।
चाकर चितवत चौपटा, चलनी करत मकान।।612।।

सकल मान काना भया, जन्मा वंश कपूत।
जहाँ दृष्टि संसार की, वहाँ बसत अब भूत।।613।।

अक्रूर रेख सिन्दूर की, सज्जन की पहचान।
रहित पताका हाथ हा! दूषित है सम्मान।।614।।

जहाँ सम्बन्ध समलैंगिंक, बचा न नैतिक बाल।
मनुज देह मैला करत, खात मिठाई काल।।615।।

अहंकार की लगन यदि, नारी का दिल देख।
चमकत मन्दिर दर्प द्वेष, है बामा का लेख।।616।।

नारी नारी शत्रु हैं, सदा बढ़ाती बैर।
समझ-बूझ की चूक से, ये करती हैं सैर।।617।।

क्षुद्र विचार है नारि का, क्षुद्र काम क्षुद्र बोल।
जहाँ-जहाँ ये जात है, घर की देती पोल।।618।।

जहाँ जगत सुख चाह है, मुख से निकलत आह।
जहाँ नहीं परवाह दुख, वहाँ वाह ही वाह।।619।।

खिले कुसुम हैं बाग में, लता-विटप के संग।
कैंधों आई बसन्त ऋतु, करत नींद है भंग।।620।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सबहिं बुलावत कोकिल, आई गयो ऋतुराज।
मन की खुशी बटोर लो, भाग्य मिले यह राज।।621।।

रक्त वर्ण सब वन हुए, मनो रही रण-भूमि।
कली-फूल की भूमि हो, सदा रही उर चूमि।।622।।

गीदड़, गीद्ध, कुक्कुर की, रहीं माँस से प्रीति।
जैसी जिसकी प्रकृति, बैठत वैसी रीति।।623।।

काम कीड़ा, आहार में, नर-पशु सब हैं एक।
एक विभाजक राशि है, धर्म-कर्म की टेक।।624।।

हृदय विचारी छली गर्य, रहा विवेक उदास।
वही जगत में सफल है, दोनों का जँह वास।।625।।

रंग बिरंगे पुष्प से, अटवी है मुस्कात।
मनो सकल वन तितली, नृत्य करत मृदु-गात।।626।।

कमल-कुमुदिनी एक संग, खिले सरोवर माँहि।
उदय-अस्त के मेल से, साथ-साथ मुसकाहिं।।627।।

मधुकर मधु में मधुर हैं, नृत्य करत मुसकाय।
मनो विरागी मोह तजि, प्रभु के अंक समाय।।628।।

जिसको समझा अपना, वही करत है घात।
रैनि अँधेरी अरि सदन, बैठि करत है बात।।629।।

हितू जनावत बहुत जन, पर करते हैं घात।
एक हितू है जगत्पति, बकिया कुकुर जात।।630।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राम-नाम सच बीज है, और लगावत दाग।
मनसा काया क्षेत्र में, बोये से फल-फाग।।631।।

वाणी की गरिमा बढ़ी, बोलहु सोच-विचार।
बोलत ही झलकत झरत, वैभव सकल-अचार।।632।।

चटका जाता चटक-बीच, सुरभि जात गो माँहि।
जिसकी जैसी प्रकृति, बैठत संग समाहि।।633।।

मधुप मुस्काता पुष्प पर, जूँ कुन्तल लपटाय।
जैसी जिसकी चाह है, वैसी संगति भाय।।634।।

शिक्षक ऐसा चाहिए, जैसा मालि सुभाय।
सींच-सींच कर पौध को, देत अनोखी काय।।635।।

शिक्षक रत्ला शिष्य पौध, अंक सदा लपटाय।
सब कुछ अपना अर्पि कर, आगे देत बढ़ाय।।636।।

शिक्षक ऐसा चाहिए, जैसी मोमबत्ति सुजान।
आपु छार का रूप धरि, करत शिष्य प्रधान।।637।।

केवल विद्या ज्ञान से, सम्भव नहीं सुजान।
सदाचार, शुभ कर्म से, जीवन का है मान।।638।।

चरित्र मनोहर राशि है, जीवन की पहचान।
जूता खात चरित्र से, माथे मुकुट सुजान।।639।।

धर्म, मित्र सच वाम की, सब नर करत बखान।
विपद काल के दाव पर, होत सही पहिचान।।640।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सब शिक्षा का मूल है, प्राणी सेवा फूल।
ऐसा आचरण करन से, दूर होत हिय शूल।।641।।

चन्द्र-वदन, विष्णु-वदन, नृप महिमा यम-जाल।
कण-कण की सेवा करत, दूर होत भव-काल।।642।।

राम-नाम महिमा बिना, भाषण फीका होय।
लवण रहित जिमि अशन का, करत बखान न कोय।।643।।

नाम सकल गुण खान है, नाम जपे कल्याण।
नाम जपे भव पार है, नाम अचूका वाण।।644।।

जहाँ नाम तहं धर्म है, जहाँ नाम तहं ज्ञान।
जहाँ नाम तहं मोक्ष है, नाम रूप भगवान।।645।।

नाम रूप उर आवते, सकल सूल मिट जात।
नाम रूप रवि फूल है, उदय होत नहिं रात।।646।।

नाम रूप के बसत ही, चाह सकल जरि जात।
जिमि पतझड़ के छाँह से, पात सकल झरि जात।।647।।

बन्दौ गुरु पदकमल, सकल लोक के ईश।
जिनके सुमिरण मात्र से, मूढ़ बनत जगदीश।।648।।

जड़-चेतन संसार का, स्वामी है बस एक।
मिलत सदा वह उसी को, जिसकी चातक टेक।।649।।

वहीं सुखी धनवान है, जिसकी गुरु से प्रीति।
बाकी सब संसार तो, है बालू की भीति।।650।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कपटी क्रूर कुचाली, विषयी-कीट-पतंग।
नाथ तुम्हारी आस है, दुनिया है बेरंग।।651।।

सदा बुराई बसत है, अंग-अंग में आय।
नाथ कुकर्मी दास है, कृपा-करहुँ उर आय।।652।।

जान-जान कर कूप में, पाँव बढ़ाता फूल।
एक तुम्हारी आस है, हरो हृदय का शूल।।653।।

रोज सोचता आज से, सुमीरुँगा गुरु नाम।
सुबह जगत पुकारता, कहाँ गये मेरे दाम।।654।।

भटक-भटक कर उम्र को, गँवा दिया भगवान।
गंग अंग का रूप ले, करो मेरा कल्यान।।655।।

दुष्ट-हृदय के एक बस, तुम्ही एक अवलम्ब।
सरिता हाय अनाथ की, सिन्धु बनो हे अम्ब।।656।।

अवगुन मोर बिसार दे, महिमा के अवतार।
दोष लोह का भूलकर, पारस देता तार।।657।।

हरा एक, एक ठूँठ वृक्ष, बिन पत्ती मुरझाय।
बादल ये सब भूलकर, सम पानी बरषाय।।658।।

कोई राजा बनत है, माँगत कोई भीख।
जननी देखत दौड़कर, अंक लगावत चीख।।659।।

तुम सुनार सुन्दर हुए, मैं टूटा लंकार।
मेरा रूप संवार दो, महिमा के आगार।।660।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वायस बन नर रूप में, चलत मराली चाल।
तुम्हीं एक अवलम्ब हो, खड़ा सामने काल।।661।।

जबसे भू पर जन्म लिया, चला शास्त्र विपरीत।
दाम सँवारा जुगति से, भूल गया प्रभु-प्रीति।।662।।

द्रोपदी की आह की, तुमने सुनी पुकार।
एक तुम्ही आधार हो, स्वाति पपीहा पार।।663।।

जहाँ हुआ हवन स्वार्थ का, छिटक गयी चिनगारि।
नहीं बचा कोई अब शायद, लगी आग वन भारि।।664।।

गुरु की महिमा अमिट है, अमिट किया उपकार।
तम को दूर भगाकर, अमिट दिखाया सार।।665।।

गुरु समान दाता नहीं, गुरु सम नहिं उपकारि।
गुरु समान शुभरूप नहिं, गुरु सम नहिं रखवारि।।666।।

परम सुख की सम्पदा, गुरु में रही समाय।
तन मन धन कर अर्पिता, गुरु से नेह लगाय।।667।।

रामनाम बिनु जगत का, मिथ्या हर सुख शान।
राम नाम गुरुमंत्र का, केहि विधि करु बखान।।668।।

संचय होता पुण्य जब, तब गुरु मिलता लोक।
ज्ञान-निधि गुरु बाण से, मरता है भव-शोक।।669।।

सूत छात्र-बुनकर गुरु, गढ़ि-गढ़ि काटे सूत।
कैंची सूई लगाय के, देता रूप सपूत।।670।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गुरु राई शिष्य तेल है, अद्‌भुत समझो खेल।
शिष्य के खातिर स्वयं को, देत कोल्हू में ठेल।।671।।

सत्य अहिंसा नीति अरु, ईमानदार की प्रीति।
मानव बनने की सुगम, कही मनीषी रीति।।672।।

धन राखे धन जात है, धन त्यागे धन होत।
जैसे पौध वरसीम का, काटे पर ही होत।।673।।

प्यार अधिक, अंकुश अधिक, अति को समझो शूल।
जैसे अशन अधिक से, उदर जात है फूल।।674।।

तन मन धन से अपर का, जो नहिं शूल बढ़ाय।
जीवन उसका सफल है, चन्दन कण्ठ सुहाय।।675।।

आंगे पैर बढ़ाइये, हृदय विवेक के संग।
इनके तो व्यवधान से, जीवन समझो भंग।।676।।

जीवन तो एक गणित है, समझो समय सवाल।
थोड़ी सी गलती हुई, जीवन बना जवाल।।677।।

जाति-पाति का भेद-भाव, नहीं मनुज पहचान।
जिसके कर में कर्म है, उसका ही सम्मान।।678।।

तीनि लोक चौदह भुवन, कर्म बढ़ावत भाल।
जैसे सोये सिंह के, मृग नहिं आवत गाल।।679।।

उत्हास सम्पन्न, कर्मठी, दृढ़-निश्चयी जो वीर।
आई इन्दिरा मन्दिर, हृदय मिटावत पीर।।680।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विद्या राखे जात है, खर्चे से हो दून।
बिन विद्या संसार में, जीवन समझो सून।।681।।

भूपति पूजित राज्य में, सकल राज्य विद्वान।
विद्याहीन मनुष्य का, जग में नहिं सम्मान।।682।।

दिशा-अन्त पानी पियत, निशा अन्त पर दूध।
अशन-अन्त पर तक्र पियत, नहीं वैद्य की सूध।।683।।

शाकाहार उत्तम है, सुगम सन्तुलित मान।
मांसाहार जो करत है, नर नहिं है शैतान।।684।।

गाँजा, भाँग, शराब से, मानुष होत खराब।
इनके सेवन करन से, नष्ट धाम संग आब।।685।।

मात-पिता आचार्य वृद्ध, जग में देव समान।
इनकी सेवा करत जो, सचमुच वही महान।।686।।

छात्र वही कमजोर है, देत परीक्षा डोल।
जैसे दुर्बल वृक्ष को, पछुवाँ देती झोल।।687।।

दशरथनन्दन नमन है, महिमावान् अनन्त।
छल-कपट से दूर कर, मुझे बनाओं सन्त।।688।।

विहग, नार, गज, विटप को, लिया अंक लपटाय।
अवगुनहारी बकस दो, अबकी गले लगाय।।689।।

दुर्जन नर के कण्ठ में, बसत नहीं मृदु बैन।
जैसे अमृत के मिले, नहीं राहु को चैन।।690।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सत सज्जन की बयन है, ज्यों पुहुप के वास।
नहीं पुहुप कछु देत है, तो भी वासित रास।।691।।

चाह प्रभु वैसी मेरी, जल-सफरी जस चाह।
तुम बिनु चैन न रैनि दिन, उचित दिखाओ राह।।692।।

सुख-दुख दोनों मीत हैं, सदा रहत मनु संग।
जैसे रथ का चक्र ही, अध-उध होता जंग।।693।।

अधम डरत आरम्भ नहीं, मध्य बीच में त्याग।
परम लड़त है अंत तक, सदा जगावत भाग।।694।।

बिम्ब तन का रैनि दिन, रहत सदा ही संग।
वैसी संगति साधु की, मिटत नहीं है रंग।।695।।

दुख की शाख हरी हुई, पड़ी विमाता भाल।
जैसे छूटे डार ते, खड़ा रहा कपि काल।।696।।

जीतत ही है राज भोग, मरत मिलत सुरभोग।
इसीलिए ही धीर-वीर को, त्याग नहीं रणयोग।।697।।

सहोदर से स्नेह करो, अवगुण जाओ भूल।
गहो फूल गुलाब का, पड़े रहन दो शूल।।698।।

कुशल नहीं है देश में, चला स्वार्थ का गान।
ज़हाँ-जहाँ आवाज गयी, सभी हुए परशान।।699।।

सन्त हृदय है पुहुप सम, सदा करत उपकार।
उदार-उर की गन्ध से, सदा करत सत्कार।।700।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सन्तों की वाणी सुनो, सुबह शाम कर ध्यान।
द्वेष, दाह से दूर रह, निश्चित है कल्यान।।701।।

काम क्रोध, मद लोभ के, स्वामी हैं सब सन्त।
सन्त दरश से तुरत ही, होत विकारा अन्त।।702।।

सन्त हृदय मकरन्द है, समझो निर्मल नीर।
भाव सहित मज्जन करत, दूर होत भवपीर।।703।।

सदा धर्म को माथ रख, चलते सन्त असोच।
चरण-कमल की वन्दना, दूर होत सब सोच।।704।।

सन्त हृदय है वृक्ष सम, सदा देत फल दान:
इसके दर्शन से बढ़त, धन-विद्या अरु मान।।705।।

सन्त हृदय है औषधि, कड़वा लगता स्वाद।
दूर करत तन व्याधि सच, नर होता आबाद।।706।।

सन्त हृदय जगहंस है, जग गुण दोष की खान।
नीर छीर को अलग कर, गुण की करत बखान।।707।।

जहाँ सन्त तहँ मैं नहीं, मैं का करत आहार।
मैं के जाते जीव के, तन मन संग बहार।।708।।

बिनु श्रद्धा के जगत में, खड़ा काल जस व्याल।
श्रद्धा अरु विश्वास से, ज्ञान होत तत्काल।।709।।

फूल से कोमल सन्त जन, बज्र से अधिक कठोर।
अनुचित उचित में भेदकर, गुण को लेत बटोर।।710।।

RajGuru Math, Shiyala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दया, धर्म सच सत्य को, माथ चढ़ावत सन्त।
बड़ी अनोखी चाल है, विधि हूँ न पावत अन्त।।711।।

है संत सुगम रत्नाकर, मणि गुण लेत बसाय।
और दोष के मिलत ही, दुरहिं देत भगाय।।712।।

धर्म रतन की खान है, धर्म करत कल्यान।
बिना धर्म के जगत में, नहीं होत है ज्ञान।।713।।

लोभ से दूरी उचित है, लोभ जगत का शूल।
लोभ के कारण अवध में, हुआ नष्ट रविकूल।।714।।

धन गणिका का रूप है, करत भ्रष्ट संसार।
सत्यासत्य विवेक मेटि, जीवन करत बेकार।।715।।

लक्ष्मी वाहन उल्लु है, चढ़त जे उल्लू होय।
समझ सहोदर दौलत, रहत निकालत टोय।।716।।

दौलत की जहँ चाह है, सदा निकलती आह।
तीनि लोक चौदह भुवन, कहीं नहीं है राह।।717।।

जहाँ सन्त तहँ कन्त है, जहाँ लण्ठ तहँ हन्त।
सन्तों के शुभ निवास से, अवनी बनत बसन्त।।718।।

मद की संगति करन से, सुखी होत है काल।
ऐसा दशमुख ने किया, गया काल के गाल।।719।।

अच्छी संगति करन से, ऊँचा होता भाल।
पुष्प की संगति कीट की, चढ़त सन्त कपाल।।720।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सदा रहो तुम सन्त संग, सन्त करत उपकार।
मैत्री कलह सन्त संग, तज असन्त व्यवहार।।721।।

पर्वत खाँइ संत संग, करो सदा स्वीकार।
इन्द्रालय की दुष्ट संग, उचित रही दुत्कार।।722।।

दर्शन सन्त का करन से, दूर होत है पाप।
जैसे चन्दन लेप से, बिखर जात तन ताप।।723।।

शीतल वात हैं सन्त जन, मधुर-मधुर मुस्कान।
ताप हरत दुख़ गात नर, देता सुन्दर ज्ञान।।724।।

सन्त सरस है कूप उर, अमल नीर है ज्ञान।
सच नीर पिये स्नान से, तम को नहीं ठिकान।।725।।

जहाँ विनय तहँ ज्ञान है, विनय वृक्ष मधु संत।
ऐसे संत के संग में, नहीं स्वाद का अन्त।।726।।

सन्त पुष्प मधुमक्खि बन, जाहु सन्त के पास।
ले मकरन्द अटल मन,बिनु भय करहु निवास।।727।।

क्षमा, सदन है सन्त जन, रत्न-हृदय आगार।
मिला नहीं सत्संग जब, जीवन बना अंगार।।728।।

नागफनी है सकल विश्व, काँटे का बना समाज।
सन्त बिना है जगह नहीं, समझ लेहु यह राज।।729।।

दम्भ द्वेष छल-कपट से, बनी ज्वाल की ताज।
स्वार्थ-सरित जग तीव्र हैं, नहीं काल को लाज।।730।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मीन-मीन की रीति है, पेट-बेंट की गीत।
एक प्रभु रही आस की, हृदय बढ़ाओं प्रीत।।731।।

गुण-अवगुण दो बीज है, तन है वीर बहूटि।
ठानत समर प्रत्येक क्षण, अवगुन को है छूट।।732।।

नारंग फल हैं संतजन, बाहर लगत कठोर।
ज्यों-ज्यों नीचे जाइये, होतबदन रंग गोर।।733।।

सन्त कलश अमृत भरा, जो चाहत सो लेत।
पीवत जे नर पेट भर, भवसागर छोड़ देत।।734।।

संत हृदय नलकूप है, निर्मल नीर बहाय।
कोउ पीवत मज्जन कर कोउ, निन्दक हो जाय।।735।।

संत सगुन दुर्जन अगुन, नद-नाले की रीति।
नाला जबतक दूर है, नद से होइ न प्रीति।।736।।

जंगल जग है संतपिक, मधुर वयन उपदेश।
भ्रमण करत है सकल जग,नर नहिं जानत वेश।।737।।

दुष्ट हृदय अहि हृदय है, वाणी विष की पान।
गर्व सखा को साथ ले, कपट करत जलपान।।738।।

विद्या लेकर दुष्ट जनन, बाँधत पूल विवाद।
दया क्षमा से दूर रह, स्वयं होत बर्बाद।।739।।

बली होत जहँ दुष्ट जन, बली चढावत रोज।
निसि-वासर छति अपर की, करत रहत वह ओज।।740।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मधुर वचन दुर्जन बोलत, जैसे कोयल होय।
भेद हृदय का जानकर, बान चलावत टोय।।741।।

देखत सुख वैभव छटा, हृदय उठत वहु शूल।
देखि नियति रत्नाकर, गदगद हो दुख भूल।।742।।

जहाँ लूट तहँ एक जूट, रण देखत भगि जात।
काम, क्रोध, मद, लोभ से, कबहुँ न मन अकुलात।।743।।

सदा असत्य को साथ ले, कर असत्य से ब्याह।
बिन असत्य बोले उन्ह, नहीं चैन की राह।।744।।

माता पिता गुरू विप्र से, दुर्जन करत विरोध।
जो करता उपकार नर, उनपर करता क्रोध।।745।।

जर जोरू ससुराल से, चलती सुन्दर प्रीति।
नाता केवल स्वार्थ का, यही दुष्ट की रीति।।746।।

सबल समक्ष बोलैं नहीं, निर्बल को दें लात।
जिनके संग अशन करत, वहीं करत हैं घात।।747।।

जब कबहूँ आवत विपति, रोवत हाय मचाय।
सुख-राशि के उदय होत, भूलि जात सब हाय।।748।।

लोभ सदन हैं दुष्ट जन, लोभ से करते प्यार।
लोभ सिद्ध नहिं होत जब, करत शीघ्र ही वार।।749।।

दुष्ट हृदय है पारधि, मधु फैलावत जाल।
सरस अन्न की लोभ दे, पकड़ लेत जिमि काल।।750।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पीड़ित मनुज विपत्ति का, जो कहुँ मिलत असन्त।
पावक मह घी डालकर, मानत सुखद बसन्त।।751।।

परधन परनारी ललक, सदा रहत उर माँ हि।
नीच कर्म को करत हैं, सिर ऐंठत जन माहिं।।752।।

जहाँ कतहुँ अवसर मिलत, परिचय देत नवीन।
शर्म और संकोच तजि, निज बयान प्रवीन।।753।।

ऋषि मुनि शास्त्र संतन को, गाली दें मुस्काहिं।
अपनी करत बखान सब, तनिक न दुष्ट लजाहिं।।754।।

बात सुनत जहँ धर्म की, शीघ्र दूर हटि जात।
जैसे छुवत शरीर को, लाजवन्ति कुम्भिलात।।755।।

गाँजा भाग शराब बिनु, चयन नहीं है दुष्ट।
कड़वी वाणी बोलकर, करत हृदय तन पुष्ट।।756।।

कृपण सदन है दुष्ट जन, करत अठ्ठनी मार।
मात-पिता गोघात कर, गृह राखत परनार।।757।।

गाँजा भाँग शराब में, पैसा खर्च न मोह।
शिक्षा सेव उपकार में, खर्च करत हो ओह।।758।।

अशन-बसन सब तामसी, तामस ही व्यवहार।
पशु समान भोजन करत, मतलब नहिं आचार।।759।।

बिना पूँछ अरु सींग के, घूमत मृग सम बाग।
भोग और भोजन भगत, वंश लगावत दाग।।760।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मान और सम्पत्ति लिए, सदा रहत परेशान।
सेवा लेते सन्त से, समझत नहिं नुकसान।।761।।

अधिक लालन अंकुश अधिक, दोनों की दुख देत।
मध्य मार्ग के साथ से, बढ़त ज्ञान का हेत।।762।।

शिक्षा उसको कहत हैं, पुष्ट करत जो देश।
दृढ़ प्रज्ञा दृढ़ वचन हो, यही रहा उपदेश।।763।।

आत्मनिर्भर विश्वास ही, शिक्षा का उद्देश्य।
धर्म-चरित्र को साथ रख, और चाह नहि शेष्य।।764।।

शिक्षा ऐसी चाहिए, करै जगत से प्यार।
बन्धु समझ इस विश्व को, उचित करत व्यवहार।।765।।

शिक्षा ऐसी चाहिए, कर्मठ नर हो जाय।
भाग जाय आलस प्रबल, सुखी मनुज मुस्काय।।766।।

केवल अक्षर ज्ञान से, शिक्षित नहीं समाज।
मनुज-मनुज बन जाय जब, तब शिक्षा का राज।।767।।

साहस, धैर्य, पराक्रमे, शिक्षा के हैं शान।
जिसके उर ये वसत हैं, बनता सदा महान।।768।।

शिक्षक जग का हंस है, करत दृष्टि विस्तार।
पाप-पुण्य का भेद कर, सिखवत भल व्यवहार।।769।।

मात-पिता शिक्षक प्रथम, वहीं बीज पड़ जाय।
जैसी मन्दिर भूमि है, तैस पौध विकसाय।।770।।

RajGuru Math, Shiyala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मात-पिता का काम है, श्रद्धा दें भरपूर।
श्रद्धा उर में बसत जब, तब विद्या का शूर।।771।।

छात्र धर्म यह कहत है, करें बड़ों की सेव।
वृद्ध चरण को चूमकर, सुन्दर आशीष लेव।।772।।

शिक्षा वह भरपूर है, जगे आत्म-विश्वास।
चाह स्वयं पूरी करे, नहीं आन की आस।।773।।

उचित-अनुचित का ज्ञान ही, शिक्षा की पहचान।
इसके रहे अभाव ते, नहिं शिक्षा सम्मान।।774।।

जहाँ विवेक विचार की, समता है आधार।
चलता वहीं समाज में, जीव-जीव का प्यार।।775।।

शिक्षक को यह चाहिए, करे छात्र से प्यार।
जैसे बेटा-बेटी से रखत नेह, रजत परिवार।।776।।

सच सफल वहीं है शिक्षक, जिसका उचित आचार।
जिसके पीछे चलत ही, बने छात्र भरतार।।777।।

शिक्षक शैल विशाल है, छात्र है लता समान।
शिक्षक का अवलम्ब ले, बनता छात्र महान।।778।।

सुधा रूप है शिक्षक, छात्र कलश है हेम।
शिक्षक सुरा फूटा कलश, बढ़त नहीं नित प्रेम।।779।।

छात्र संग सब रखत हैं, शिक्षक मित्र का भाव।
तभी सुरक्षित बढ़त है, बीच धार में नाव।।780।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अपर नौकरी से अलग, शिक्षक का व्यवसाय।
सदाचार का वृक्ष यह, सुन लो ध्यान लगाय।।781।।

नहीं रहीं यह नौकरी, शिक्षक वीर महान।
कर्त्तव्यनिष्ठ, तप, त्याग से, करो छात्र कल्याण।।782।।

वैभव पीछे दौड़ना, नहिं शिक्षक का काम।
कंचन जीवन बेचकर, करत धर्म बदनाम।।783।।

तप, त्याग, सत्कर्म से, मिला अध्यापन कर्म।
अर्थ तुला पर तौलना, नहीं हमारा धर्म।।784।।

जहाँ पुष्प तहँ भ्रमर है, जहँ मैला तहँ मक्खि।
पुष्प-वन पर पड़े भ्रमर, उचित यही है भक्ति।।785।।

बिहड़ नदी है मार्ग में, तू सार्थक अभियन्त।
सदाचार के पूल से, कर दो पार तुरन्त।।786।।

खाता मदिरा मांस जो, शिक्षक नहिं शैतान।
जन्म गँवाया व्यर्थ वह, नहीं बना इन्सान।।787।।

न अस्थि चबाना नर का, निशिचर का है काम।
इसी बात पर राम का, लेते हैं हम नाम।।788।।

धूम्रपान का व्यसनी तो, गीदड़ का है भाय।
मर्कट के रूप नाचता, शिक्षक का तन पाय।।789।।

भाँग धतूरा खात जो, सचमुच है वह धूर्त।
जीवन है चौपाय का, झूठे पहिनत कूर्त।।790।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सुधा मेह मृदु वचन से, सदा सींच जग पौध।
कबहुँ आई बसन्त ऋतु, जन्म सफल हो बौध।।791।।

दोनों का है शत्रु सुख, शिक्षक छात्र नवीन।
त्याग इसी का करत है, विद्या में प्रवीन।।792।।

हँसा खेला कर छात्र को, शिक्षा दो हे मीत।
मार-पीट की शिक्षा, रही न्याय विपरीत।।793।।

थोड़ा भय दिखा-दिखा कर, करो छात्र से प्रीत।
बीच-बीच में हँसा-हँसा, उसका दिल लो जीत।।794।।

छात्र रुचि की तुमको, है करनी पहचान।
चुन-चुन कर औषधि लाओ, बने छात्र इन्सान।।795।।

शिक्षक वैद्य छात्र रोगी, उसका कर उपचार।
ऐसी औषधि खिलाकि, सुधर जाय आचार।।796।।

बारह वर्ष तक कुत्ता जियत, तेरह उम्र सियार।
जीवित रह शत शिक्षक, देता जग को प्यार।।797।।

छात्र वर्ग का धर्म है, करे गुरु सत्कार।
शिक्षक के अनुसार ही, सुन्दर करे अचार।।798।।

रही चरित्र की पूछ जग, रहो दूर व्यभिचार।
जहाँ सदन व्यभिचार का, भाग पड़ा आचार।।799।।

पावन चित्त निर्मल बयन, शिक्षक के हथियार।
जहाँ बढ़त इस रूप में, खड़ी बसन्त बयार।।800।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अपने विषय के ज्ञान में, शिक्षक हो परिपक्व।
छात्र भलाई सहज है, चिन्ता करत तू कत्व।।801।।

आब मिटा, आदर मिटा, साथ मिटा सम्मान।
पैसा माँगत शिष्य से, शिक्षक मिटा ईमान।।802।।

शिक्षक के यदि ज्ञान में, कमी कहीं से होय।
पढ़ि-पढ़ि पुस्तक ध्यान से, पूरा करो सब टोय।।803।।

शिक्षक का ये धर्म है, पूरी करे जिज्ञास।
डाँट डपट कर छात्र के, हाथ न दे निराश।।804।।

रहा कर्त्तव्य यह छात्र, पढ़े पाठ घर जाइ।
जहाँ समस्या हो पैदा, पूछत मन हरषाइ।।805।।

जैसे साधु जंगल में, छोड़ करत तप मोह।
वैसे ही वास एकान्त, पढ़ो छात्र तजि कोह।।806।।

भोजन विस्तर वस्त्र का, सदा रखो तुम ध्यान।
तपसी के व्यवहार में, तेरा है कल्यान।।807।।

निन्दक, व्यसनी, दुष्ट यदि, करता हो उपहास।
उसकी तुम परवाह तजि, सदा रखो मुख त्रास।।808।।

उन्नत करो चरित्र को, सबको हो विश्वास।
खिले पुहुप को देखकर, आ मधुमक्खी पास।।809।।

विद्या है अनमोल धन, सभी गुणों की खान।
बिन विद्या के सभा में, नहीं रहत है मान।।810।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जैसे गुरुकुल में पहले, था शिक्षक शिष्य सम्बन्ध।
वैसे ही व्यवहार से, सुन्दर होगा कन्ध।।811।।

बहुत शिक्षक हैं करते, नहीं कुशल अध्यापन।
ऐसे शिक्षक-शिष्य में, सम्भव नहिं अपनापन।।812।।

चयन पद्धति शिक्षक की, उचित नहीं है जान।
केवल मौखिक बात से, सहीं नहीं पहचान।।813।।

सही परीक्षा तब होगी, होता जब अध्यापन।
बच्चे बनकर प्रश्न करें, सच उत्तर सत्यापन।।814।।

चयनकर्त्ता हो ईमानदार, न्याय करे सम भाइ।
नहीं किसी का स्वार्थ हो, और नहीं धन साँइ।।815।।

नीति परायण व्यक्ति हों, रखें नीति से प्यार।
सुन्दर इतिहास जीवन का, बुद्धि से होशियार।।816।।

जग में कोई बड़ा नहीं, नहीं कोई है नीच।
अपने-अपने कर्म से, मिलत मलय अरु कीच।।817।।

शिक्षा का उद्देश्य श्रेष्ठ है, करे चरित्र निर्माण।
चरित्र रहा उत्तम जिसका, उसको है निर्वाण।।818।।

छात्र रहे भविष्य देश के, वही देश के बींज।
शिक्षक है किसान देश का, उर्वर देता तीज।।819।।

ऊँच-नीच आलस्य से, सदा रहें वह दूर।
साहस और सद्‌भाव से, भरा हृदय हो पूर।।820।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Publi ... ation by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

SAPNA ASHOK PRAKASHAN
VARANASI

सपना अशोक प्रकाशन

३/५५२, रामपुर, रामनगर-वाराणसी-२२१००८

कार्यालय : बी०३६/७७७ कबीरनगर कालोनी, दुर्गाकुण्ड-वाराणसी

IMAGE/VNS./9838846236

ISBN : 81-903703-8-3

मूल्य : 40.00 PB, 125.00 HB

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.